शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 152 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 26 जून 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

वित्त मंत्री ने व्यापार और सेवाओं के प्रतिनिधियों के साथ की बजट पूर्व बैठक

नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को यहां आम बजट 2024-25 की तैयारियों के मद्देनेजर व्यापार और सेवाओं के प्रतिनिधियों के साथ बजट-पूर्व परामर्श बैठक की। वित्त मंत्रालय ने एक्स पर कहा कि आगामी आम बजट 2024-25 के लिए व्यापार और सेवाओं के प्रतिनिधियों ने वित्त मंत्री सीतारमण को अपने सुझाव दिए। बजट पूर्व इस परामर्श बैठक में केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी, वित्त सचिव, व्यय विभाग के सचिव, आर्थिक मामलों के विभाग और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के सचिव तथा केंद्र सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार भी शामिल हुए।

उल्लेखनीय है कि वित्त मंत्री सीतारमण ने आम चुनाव से पहले चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए अंतरिम बजट पेश किया था। चुनाव के बाद उन्हें फिर से वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने अब पूर्ण बजट पेश करने के पहले उसकी तैयारी शुरू कर दी है।

भाजपा ने अपने लोकसभा सदस्यों को जारी किया व्हिप

नई दिल्ली

लोक सभा अध्यक्ष के लिए बुधवार को चुनाव होना है। इस चुनाव के मद्देनजर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने सभी लोक सभा सदस्यों को 26 जून को सदन में उपस्थित रहने के लिए तीन लाइन का व्हिप जारी किया है। एनडीए ने लोक सभा अध्यक्ष पद के लिए कोटा से भाजपा सांसद ओम बिड़ला को उम्मीदवार बनाया है। वे 2019 से 2024 तक लोकसभा के स्पीकर रहे हैं। जबकि इंडिया ब्लाक की ओर से कांग्रेस ने आठ बार से सांसद के. सुरेश को उम्मीदवार बनाया है।

कांग्रेस ने भी अपने सभी लोक सभा सदस्यों को उपस्थित रहने के लिए व्हिप जारी किया है। एनडीए के उम्मीदवार ओम बिड़ला मजबूत स्थिति में हैं। उन्हें 293 सांसदों का समर्थन है। इनके अलावा कुछ निर्दलीय और अन्य छोटे दलों के सांसदों का भी उन्हें समर्थन मिल सकता है। दूसरी ओर विपक्ष के उम्मीदवार के. सुरेश के समर्थन में करीब 234 सांसद हैं।

लोकसभा स्पीकर का होगा चुनाव

चुनाव आज: एनडीए प्रत्याशी ओम बिरला के खिलाफ कांग्रेस ने के. सुरेश को उतारा

नई दिल्ली

18वीं लोकसभा के पहले सत्र का मंगलवार (25 जून) को दूसरा दिन है। लोकसभा स्पीकर को लेकर पक्ष-विपक्ष के बीच टकराव बढ़ गया है। एनडीए प्रत्याशी ओम बिरला के खिलाफ कांग्रेस ने के. सुरेश को उतारा है। दोनों ने दोपहर 12 बजे से पहले नॉमिनेशन फाइल किया। वोटिंग 26 जून को सुबह 11 बजे होगी। कांग्रेस सांसद के. सुरेश की दावेदारी पर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने नाराजगी जताई है। पार्टी सांसद अभिषेक बनर्जी ने कहा- हमसे इस बारे में कोई बात नहीं हुई है। दुर्भाग्य से ये एकतरफा फैसला है। अभिषेक के बयान पर राहुल ने कहा- जय संविधान। इससे पहले सुबह राहुल संसद पहुंचे तो कहा- कांग्रेस अध्यक्ष के पास स्पीकर के समर्थन के लिए राजनाथ सिंह का फोन आया था। विपक्ष ने साफ कहा है कि हम स्पीकर को समर्थन देंगे, लेकिन विपक्ष को डिप्टी स्पीकर का पद मिलना चाहिए। राजनाथ सिंह ने दोबारा फोन करने की बात कही थी, हालांकि कॉल नहीं आया। राहुल के बयान पर राजनाथ सिंह ने संसद के बाहर मीडिया से कहा कि मैंने स्पीकर पद के समर्थन के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से तीन बार फोन पर बातचीत की है। वे सीनियर लीडर हैं। मैं उनका सम्मान करता हूं।

बिरला जीते तो दोबारा स्पीकर बनने वाले भाजपा के पहले सांसद होंगे

एनडीए की ओर से ओम बिरला दोबारा स्पीकर पद के कैंडिडेट हैं। राजस्थान के कोटा से सांसद ओम बिरला 2019 से 2024 तक स्पीकर रह चुके हैं। वे जीतते हैं तो भाजपा के पहले ऐसे सांसद होंगे, जो लगातार दूसरी बार लोकसभा स्पीकर का पद संभालेंगे। अगर वे अपना कार्यकाल पूरा कर लेते हैं तो कांग्रेस के बलराम जाखड़ के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेंगे।

दरअसल, बलराम जाखड़ 1980 से 1985 और 1985 से 1989 तक लगातार दो बार लोकसभा अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने अपने दोनों कार्यकाल पूरे किए थे।

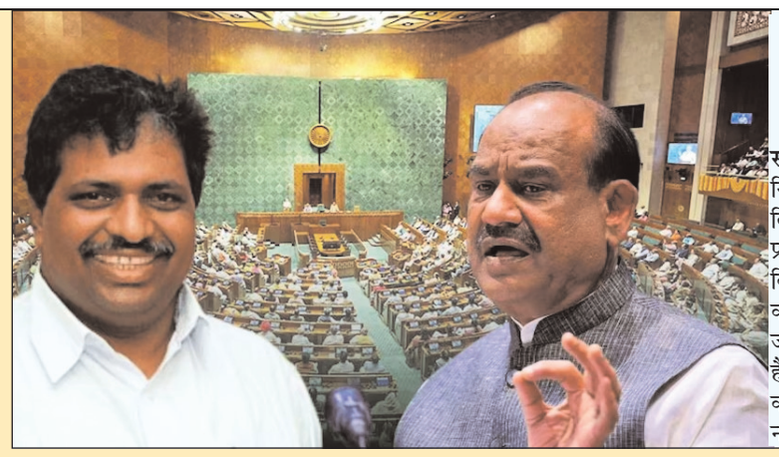

दोनों पद के चुनाव की प्रक्रिया अलग होती है: रिजिजू

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, "पिछले 2 दिनों से हमने विपक्ष की प्रमुख पार्टियों से संपर्क किया और स्पीकर के पद को लेकर हमारी बात हुई। जब से देश आजाद हुआ है तब से लेकर आज तक कभी स्पीकर का चुनाव नहीं हुआ है और हम चाहते हैं कि स्पीकर को निर्विरोध सर्वसम्मति से चुना जाए इसलिए हमने उनसे संपर्क और अपील की। उन्होंने कहा कि वे समर्थन देंगे पर उपसभापति का पद उन्हें चाहिए। हमने उनसे कहा कि दोनों पद के चुनाव की प्रक्रिया अलग होती है।

राजनाथ सिंह ने नहीं किया कॉल बैक: राहुल गांधी

कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और सांसद राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार कहा था कि विपक्ष को सरकार के साथ रचनात्मक सहयोग करना चाहिए। सोमवार शाम को राजनाथ सिंह ने मल्लिकार्जुन खरगे को फोन किया और उनसे लोकसभा अध्यक्ष पद पर समर्थन देने को कहा। पूरे विपक्ष ने कहा कि हम लोकसभा अध्यक्ष का समर्थन करेंगे, लेकिन परंपरा यह है कि उपसभापति का पद विपक्ष को दिया जाना चाहिए। राजनाथ सिंह ने कहा कि वे मल्लिकार्जुन खरगे को फिर से फोन करेंगे, लेकिन उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं किया है। पीएम मोदी विपक्ष से सहयोग मांग रहे हैं लेकिन हमारे नेता का अपमान हो रहा है। सरकार की नीयत साफ नहीं है।

ओम बिड़ला के खिलाफ प्रत्याशी उतारने पर बीजेपी खफा

लोकसभा स्पीकर को लेकर विपक्ष की तरफ से प्रत्याशी की घोषणा के बाद भाजपा ने इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाया है। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा और संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने मंगलवार को कांग्रेस को आपातकाल पर घेरते हुए उस पर जबरदस्त हमले बोले। नड्डा ने लोकसभा अध्यक्ष पद के चुनाव में एनडीए के खिलाफ उम्मीदवार उतारने के लिए विपक्ष की निंदा की। लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में कांग्रेस ने एनडीए के ओम बिड़ला के खिलाफ अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेता के. सुरेश को उम्मीदवार बनाया है। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा 1975 में लगाए गए आपातकाल की 49वीं बरसी के मौके पर भाजपा मुख्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान नड्डा ने लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव के मुद्दे पर कांग्रेस पर पाखंड और दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाया।

कौन है इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार के. सुरेश?

कोडिकुन्निल सुरेश यानी के. सुरेश केरल की मावेलिकारा लोकसभा सीट से सांसद हैं। साल 1989 से उनका इस सीट पर कब्जा है। उन्हें लोकसभा में सबसे ज्यादा अनुभव हैं। वे अब तक 7 बार सांसद बन चुके हैं। साथ ही के सुरेश कांग्रेस की सरकार में 2012 से 2014 तक राज्य मंत्री थे। साल 2018 में उन्हें केरल कांग्रेस कमेटी का कार्यकारी अध्यक्ष भी बनाया गया था। जाने माने दलित नेता के. सुरेश एआईसीसी के सचिव भी रह चुके हैं। जानकारी के अनुसार, के. सुरेश के नामांकन पत्र में इंडिया ब्लॉक के सहयोगी डीएमके, शिवसेना (उद्धव), शरद पवार (एनसीपी) और अन्य प्रमुख दलों ने हस्ताक्षर किए हैं। टीएमसी ने अभी तक हस्ताक्षर नहीं किए हैं। वे ममता बनर्जी की मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं। वहीं, एनडीए की तरफ से लोकसभा अध्यक्ष के लिए ओम बिरला उम्मीदवार होंगे। बिरला राजस्थान के कोटा से लगातार तीसरी बार के सांसद हैं। 2019 में पहली बार इन्हें स्पीकर बनाया गया। एनडीए ने दूसरी बार उन्हें लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार बनाया है। ओम बिरला की सदन में कड़े प्रशासक की छवि रही हैं। मंगलवार को लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए दोनों नेताओं ने अपना नामांकन दाखिल कर दिया है।

लोकसभा में राहुल गांधी होंगे विपक्ष के नेता

नई दिल्ली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी 18वीं लोकसभा में विपक्ष के नेता की जिम्मेदारी निभाएंगे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर मंगलवार को हुई बैठक में इस पर चर्चा हुई। बाद में इसका कांग्रेस की तरफ से एलान किया गया। बताया गया है कि खरगे के आवास पर हुई बैठक में विपक्ष के कई बड़े नेता शामिल हुए थे। इनमें राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) के हनुमान बेनीवाल। राकांपा-शरदचंद्र पवार की सुप्रिया सुले शामिल थीं। बैठक के बाद कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने एलान किया कि लोकसभा में राहुल गांधी विपक्ष के नेता होंगे। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने इस बार उत्तर प्रदेश के रायबरेली और केरल की वायनाड सीट से चुनाव लड़ा था। वे दोनों ही सीटों पर विजयी रहे। हालांकि, बाद में उन्होंने रायबरेली सीट को अपने पास रखने का फैसला किया और वायनाड सीट छोड़ दी। उन्होंने मंगलवार को ही लोकसभा सदस्यता की शपथ ली।

विपक्षी दलों में कांग्रेस के पास सबसे ज्यादा सीटें

भाजपा ने हाल ही में 543 सदस्यीय लोकसभा के लिए हुए चुनावों में 240 से ज्यादा सीटें जीतीं और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में अपने सहयोगियों के साथ सरकार बनाई। विपक्षी दलों के घटक दलों में कांग्रेस ने सबसे अधिक 99 सीटें हासिल कीं।

नीट पेपर लीक मामले में 4 राज्यों से 26 गिरफ्तारियां

8 आरोपियों की जमानत याचिका पर सुनवाई टली, मास्टरमाइंड संजीव मुखिया अभी फरार

नई दिल्ली

नीट पेपर लीक मामले में 8 आरोपियों की जमानत याचिका पर मंगलवार को पटना कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट में सरकारी वकील ने बताया कि यह केस अब सीबीआई के पास चला गया है। जिस पर कोर्ट ने कहा कि इसकी जानकारी ऑर्डर पेपर के साथ दें। पेपर मिलने के बाद मामले की सुनवाई सीबीआई की विशेष अदालत ही करेगी। अगली सुनवाई 2 जुलाई को होगी। पेपर लीक मामले में अब तक 13 आरोपी बिहार से और 6 झारखंड के देवघर से गिरफ्तार किए गए हैं। इन्हीं में से आठ आरोपियों ने कोर्ट में जमानत के लिए अर्जी लगाई थी। इस मामले में मास्टरमाइंड संजीव मुखिया की गिरफ्तारी नहीं हुई है। उसने कोर्ट में अग्रिम जमानत की अर्जी लगाई है। इस पर कोर्ट ने 15 जुलाई की तारीख तय की थी। अगर मामला सीबीआई के पास जाता है तो अग्रिम जमानत की अर्जी सीबीआई की अदालत में ही लगानी होगी।

महाराष्ट्र से गिरफ्तार 2 आरोपियों की पुलिस रिमांड 2 जुलाई तक बढ़ी

पेपर लीक मामले में महाराष्ट्र में एटीएस ने 4 शिक्षकों के खिलाफ पब्लिक एग्जाम एक्ट 2024 के तहत मामला दर्ज किया गया है। लातूर के 2 टीचर्स- संजय तुकाराम जाधव और जलील खान को गिरफ्तार किया गया है। स्पेशल कोर्ट ने आज दोनों आरोपियों की पुलिस रिमांड 2 जुलाई तक बढ़ा दी है। अब तक नीट यूजी एग्जाम में खास तौर पर दो गड़बड़ियों को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दायर हुई हैं। एग्जाम में गड़बड़ियों को लेकर देशभर में प्रदर्शन के बाद 8 जून को प्रेस कॉन्फ्रेंस की।

जेल में ही रहेंगे केजरीवाल, जमानत आदेश पर हाई कोर्ट की रोक

नई दिल्ली

केजरीवाल को अभी जेल में ही रहना होगा। दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ट्रायल कोर्ट से मिली जमानत पर रोक लगा दी है। जस्टिस सुधीर कुमार जैन की वेकेशन बेंच ने कहा कि ट्रायल कोर्ट का आदेश सही नहीं है। उसे सभी दस्तावेज पर गौर करना चाहिए था। हाई कोर्ट ने कहा कि ट्रायल कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट की धारा 45 की दो शर्तों का पालन नहीं किया है।

ट्रायल कोर्ट को ईडी को दलीलें रखने का पर्याप्त मौका देना चाहिए। ट्रायल कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के पहले के आदेशों को सही ढंग से नहीं लिया। हाई कोर्ट ने कहा कि केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट की ओर से अंतरिम जमानत चुनाव प्रचार के लिए दी गई थी।

ऐसे में उस आदेश का हवाला व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए नहीं दिया जा सकता है। हाई कोर्ट ने 21 जून को फैसला सुरक्षित रख लिया था। सुनवाई के दौरान ईडी ने कहा था कि ट्रायल कोर्ट का पूरा आदेश ही गलत है।

ईडी के मुताबिक ट्रायल कोर्ट ने ईडी की दलीलों और साक्ष्यों पर बिल्कुल गौर नहीं किया और न ही कानून के मुताबिक फैसला दिया। ईडी ने कहा था कि अरविंद केजरीवाल के खिलाफ 2023 के बाद के जुटाए गए साक्ष्यों पर ध्यान नहीं किया और फैसला कर दिया। ईडी ने कहा था कि उसने 13 आंगड़िया, गोवा के आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के बयानों को अनदेखा करते हुए केजरीवाल को जमानत देने का आदेश दिया। ईडी ने कहा था कि ट्रायल कोर्ट में सुनवाई के दौरान उसे जमानत का विरोध करने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं देकर मनी लॉन्ड्रिंग कानून की धारा 45 के शर्त का उल्लंघन किया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कजाकिस्तान के राष्ट्रपति से की बातचीत

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कजाकिस्तान के राष्ट्रपति कासिम-जोमार्ट टोकायेव के साथ टेलीफोन पर बातचीत की। राष्ट्रपति टोकायेव ने प्रधानमंत्री को दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था के सफल संचालन और तीसरी बार लगातार निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई दी। प्रधानमंत्री ने इसके लिए उन्हें धन्यवाद दिया। इसके साथ ही दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री मोदी ने अस्ताना में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के आगामी शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए भारत का पूर्ण समर्थन व्यक्त किया और विश्वास जताया कि कजाकिस्तान का नेतृत्व क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। दोनों नेताओं ने नियमित रूप से संपर्क में बने रहने पर सहमति व्यक्त की। बातचीत के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया, कजाकिस्तान के राष्ट्रपति कासिम-जोमार्ट टोकायेव के साथ अच्छी बातचीत हुई। चुनावों में सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के लिए उनका धन्यवाद किया।

कजाकिस्तान के साथ हमारी रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

वित्त मंत्री सीतारमण ने रोजगार एवं कौशल विशेषज्ञों के साथ की बजट पूर्व चर्चा

नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को यहां आम बजट 2024-25 की तैयारियों के मद्देनजर रोजगार और कौशल विकास क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ बजट-पूर्व परामर्श बैठक की। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में आम बजट 2024-25 के लिए आठवें बजट-पूर्व परामर्श चर्चा में रोजगार और कौशल विकास क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने वित्त मंत्री को अपने सुझाव दिए। बैठक में वित्त सचिव, व्यय विभाग के सचिव, उद्यमिता मंत्रालय के सचिव के अलावा श्रम मंत्रालय के सचिव तथा भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार भी शामिल रहे।

योगीराज में यूपी में पेपर लीक किया तो उम्रकैद की सजा

योगी कैबिनेट ने अध्यादेश को दी मंजूरी, सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों और पेपर लीक की रोकथाम 2024 अध्यादेश को योगी कैबिनेट ने प्रदान की मंजूरी

लखनऊ

उत्तर प्रदेश में परीक्षाओं को पारदर्शी और शुचितापूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए योगी सरकार ने एक और अहम कदम उठाया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को लोकभवन में आयोजित कैबिनेट बैठक में सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों और पेपर लीक की रोकथाम के लिए अध्यादेश को मंजूरी प्रदान की गई है। इस अध्यादेश के तहत उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सजा के कड़े प्राविधान सम्मिलित किए गए हैं, जिनमें 2 साल से लेकर आजीवन कारावास तक का दंड और एक करोड़ रुपए तक के जुमार्ने को शामिल किया गया है। उल्लेखनीय है कि योगी सरकार पहले भी पेपर लीक जैसे मामलों पर कड़े कदम उठा चुकी है और अब इस अध्यादेश को इसी क्रम में एक और बड़ा कदम माना जा रहा है।

विभिन्न परीक्षाओं पर लागू होगा अध्यादेशः लोकभवन में आयोजित मंत्रिपरिषद की बैठक के बाद वित्त एवं संसदीय मंत्री सुरेश खन्ना ने मंजूर किए गए प्रस्तावों के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैबिनेट के समक्ष कुल 44 प्रस्ताव रखे गए थे, जिसमें 43 को कैबिनेट ने मंजूरी प्रदान की है। अनुमोदित प्रस्तावों में सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों और पेपर लीक रोकथाम अध्यादेश 2024 भी शामिल रहा। वित्त मंत्री ने बताया कि पेपर लीक के संबंध में मंत्रिपरिषद के द्वारा अध्यादेश के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया है, जिसमें यदि कोई संस्था या उससे जुड़े लोग पकड़े जाएंगे तो उन्हें 2 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास की सजा और एक करोड़ रुपए तक के जुमार्ने का प्राविधान किया गया है। उन्होंने बताया कि अध्यादेश के तहत लोकसेवा आयोग, उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड, उत्तर प्रदेश बोर्ड, विश्वविद्यालय, प्राधिकरण या निकाय या उनके द्वारा नामित संस्था भी इसमें सम्मिलित हैं। यह अध्यादेश किसी प्रकार की भर्ती परीक्षाओं, नियमितीकरण या पदोन्नती करने वाली परीक्षाएं, डिग्री-डिप्लोमा, प्रमाण पत्रों या शैक्षणिक प्रमाण पत्रों के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षाओं पर भी लागू होगा। इसके अंतर्गत फर्जी प्रश्नपत्र बांटना, फर्जी सेवायोजन वेबसाइट बनाना इत्यादि दंडनीय अपराध बनाए गए हैं।

कुलपति के ताबड़तोड़ औचक निरीक्षण से नकलचियों में खलबली, केन्द्रों को चेताया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के सत्रीय परीक्षाओं में कुलपति के परीक्षा केन्द्रों के औचक निरीक्षण से नकलचियों में खलबली मच गई है। कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने मंगलवार को प्रयागराज के यमुनापार में चार परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने केंद्र अध्यक्षों को स्पष्ट निर्देश दिया कि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाएं परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों को दी जाएं। कुलपति ने चेतावनी दी कि जो मानक पूरे नहीं करेंगे उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उधर कुलपति के औचक निरीक्षण से परीक्षा केंद्र परिवर्तन की सुविधा का लाभ उठाकर नकल के भरोसे परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों की दाल नहीं गल पा रही है। कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने आज नंदकिशोर सिंह पीजी कॉलेज, नैनी, एस एन सेवा संस्थान गर्ल्स डिग्री कॉलेज, नैनी, गांधी शांति निकेतन डिग्री कॉलेज, गौहनिया तथा मोतीलाल नेहरू डिग्री कॉलेज, कौंधियारा स्थित परीक्षा केन्द्रों का दोनों पालियों में औचक निरीक्षण किया। कुलपति के परीक्षा केन्द्र पर पहुंचते ही खलबली मच गई। कुलपति अपने स्टाफ को छोड़कर अकेले ही परीक्षा कक्ष में पहुंच गए। कई केंद्रों में भीषण गर्मी में भी पंखा न चलने पर उन्होंने कड़ा रूख प्रदर्शित किया। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों के लिए परीक्षा केन्द्र को हर तरह की सुविधा प्रदान कर रहा है। ऐसी स्थिति में छात्रों को अनुमन्य सुविधाएं उपलब्ध न किए जाने पर रोष व्यक्त किया। कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम इसके पूर्व बीबीएस डिग्री कॉलेज बरना, प्रतापगढ़, डिग्री कॉलेज, उपरदहा,बरौत तथा दयाशंकर महिला महाविद्यालय, फूलपुर का औचक निरीक्षण कर चुके हैं। कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने बताया कि पूरे उत्तर प्रदेश में मुक्त विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के सुचारू संचालन के लिए उड़ाका दल और प्रेक्षकों की टीम के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रभारी एवं समन्वयकों को ?स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि वह अपने क्षेत्र के परीक्षा केन्द्रों की प्रतिदिन की रिपोर्ट मुख्यालय को प्रेषित करेंगे। इसी क्रम में बुधवार 26 जून को प्रातः 11:00 बजे सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रभारियों की बैठक कुलपति ने बुलाई है।

नवोदय विद्यालय मेजा जिम्मेदारों द्वारा बच्चों के खाद्य सामग्री का चोरी छिपे कराया जा रहा है टेंडर

कूंची गांव निवासी समाजसेवी कुंवर बहादुर ने एसडीएम मेजा को शिकायती प्रार्थना पत्र देकर लगाया गंभीर आरोप किया जांच की मांग - मेजा। मेजाखास पहाड़ी पर स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में बच्चों के लिए दूध, पनीर,खोवा आदि की सप्लाई के लिए प्रतिवर्ष टेंडर जारी किया जाता है क से चोरी-छिपे टेंडर कराने के आरोप में उपजिलाधिकारी मेजा से शिकायत की गई है। उल्लेखनीय है कि मेजा थाना क्षेत्र के कूंची गांव निवासी कुंवर बहादुर पुत्र रामजस ने उपजिलाधिकारी मेजा को दिए गए शिकायती पत्र में इस बात का आरोप लगाया है कि जवाहर नवोदय विद्यालय में टेंडर की तिथि की घोषणा करने के बाद टेंडर की तिथि नियत की जाने की प्रक्रिया है। आरोप है कि बिना घोषणा किए ही जिम्मेदार लोग चोरी-छिपे तौर पर टेंडर कराना चाहते हैं। जो नियम के विरुद्ध है। शिकायतकर्ता ने उपजिलाधिकारी मेजा से जांचोपरांत न्याय व जनहित में टेंडर की घोषणा किए जाने तथा तिथि प्रकाशित करते हुए समुचित ढंग से पूरी पारदर्शिता से उपरोक्त टेंडर का आवंटन किए जाने की मांग की है।

सरकारी गवाह व गनर पर फिर हुआ हमला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कौंधियारा थाना क्षेत्र स्थित भभोखर में उमेश पाल हत्याकांड मामले में भभोखर निवासी उस्मान उर्फ विजय चौधरी को पुलिस मुठभेड़ में घायल कर दिया गया था जिसको एस आर एन अस्पताल प्रयागराज में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई थी और भभोखर निवासी नीरज शुक्ला पुत्र स्व० भरत जी शुक्ला को सरकारी गवाह बनाया गया था और सरकारी गनर भी उपलब्ध करा दिया गया था आज शाम 5 बजे अपने घर से कौंधियारा बाजार स्थित निजी मोबाइल दूकान पर जा रहे थे की गांव के शिवचरण पुत्र खिलाड़ी राकेश पुत्र शिवचरण दिलीप पुत्र शिवचरण मुन्नीलाल पुत्र शिवचरण पंचू पुत्र शिवचरण मुकेश पुत्र मुन्नीलाल अमन पुत्र ननकऊ मुन्नालाल पुत्र ननकू लाला बाबू पुत्र संग्राम संदीप पुत्र झालर लालू पुत्र फुतीर्ला रमेश पुत्र संग्राम मंजू देवी पत्नी अशोक कुमार सुनीता देवी पत्नी रमेश रामकली पत्नी लला बाबू चमेलिया पत्नी ननकू सुशीला पत्नी श्याम बाबू राजकुमारी पत्नी रामबाबू लाल देवी पत्नी मा रीता देवी पत्नी शंकर लाल शंकर लाल पुत्र ननकू मुन्नी देवी पत्नी मुन्नालाल सुगनी पत्नी जगदीश राजकुमारी पत्नी राकेश गुड्डी पत्नी दिलीप मनसा पत्नी मन्नीलाल सितारा पुत्र विकास सुग्गीलाल पुत्र वंशी कुलदीप पुत्र लाला विकास पुत्र शिवचरण ने रास्ते में धारदार हथियार लाठी डंडे के साथ जान से करने पर अमादा हुए लेकिन बीच बचाव करते हुए नीरज शुक्ला और सरकार के द्वारा दिया हुआ सरकारी गनर अपनी जान बचाते हुए थाना कौंधियारा पहुंचे और लिखित तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत करने की मांग की है तत्काल कौंधियारा पुलिस मौके पर पहुंचकर बरामद हुआ लाठी डंडा और छोटे-छोटे नुकीले पत्थर को कब्जे में लिया।

सराय ममरेज के मोहिउद्दीनपुर की घटना को लेकर सपा का प्रतिनिधि मण्डल पुलिस आयुक्त से मिला

प्रयागराज। जिले के सराय ममरेज थानाअंतर्गत मोहिउद्दीन पुर निवासी श्रीमती कौशल्या देवी को न्याय दिलाने के लिए आज समाजवादी पार्टी के नेतागण जनपद के नये पुलिस आयुक्त तरुण गाबा से मिले।सपा नेताओं ने सराय ममरेज सहित कई थानों की पुलिस पर सत्ताधारी दल के नेताओं के अनावश्यक दबाव पर आम आदमी को परेशान किये जाने का आरोप लगाया। सराय ममरेज के मोहिउद्दीन पुर गाँव के मामले को ताजा उदाहरण बताते हुए एक ज्ञापन भी सौंपा। बता दें कि मोहिउद्दीन पुर निवासी श्रीमती कौशल्या देवी को विगत 23जून को सुबह गाँव के ही कुछ लोंगो ने पुरानी रंजिश वश मारा -पीटा था। इसकी सूचना पाकर शहर में रह रहे उसके पुत्र दिनेश कुमार उर्फ राजा को हुई तो वह मोटरसाइकिल गाँव आ ही रहा था कि विपक्षियों ने रास्ते में फूलपुर के कपसा गाँव के पास उसे भी रोक कर जमकर मार पीट की। राजा ने 112 नंबर डायल कर पुलिस से मदद मांगी। पुलिस मौके पर आई और दोनों पक्ष को फूलपुर थाने ले गई। विपक्षी गण अपने को आर एस एस का कार्यकर्ता बता कर पुलिस पर भी धौस जमाया। और रात में ही थाने से छूट गए। मगर दिनेश कुमार उर्फ राजा को रविवार से थाने में ही बैठाये रखा। इधर कौशल्या देवी विपक्षियों देवेंद्र सिंह, दीपक सिंह पुत्रगन राजेश सिंह एवं राजेश सिंह पुत्र धर्म पाल सिंह के खिलाफ अपने ऊपर हमला कर मारपीट किये जाने तथा बेटे राजा पर हमला कर मारपीट किये जाने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने के लिये थाने का चक्कर काट रही थीं कि फूलपुर थाने में बैठाये गए उसके बेटे दिनेश कुमार उर्फ राजा पर मुकदमा दर्ज कर पुलिस द्वारा जेल भेजनें की तैयारी की जाने लगी। इस बात की जानकारी सपा जिलाध्यक्ष अनिल यादव को हुई तो वह पार्टी के नेताओं का एक प्रतिनिधि मण्डल लेकर उपायुक्त से मिलने उनके कार्यालय में पहुँच गए। प्रतिनिधि मण्डल में प्रमुख रूप से जिलाध्यक्ष अनिल यादव, महानगर अध्यक्ष सैयद इफ़्तेखार हुसैन, एम एलसी डॉ मान सिंह यादव, विधायक गण हाकिम लाल बिन्द, गीता शास्त्री, पूर्व विधायक मुजतबा सिद्दीकी, पूर्व जिलाध्यक्ष पंधारी यादव, राम सुमेर पाल, रविन्द्र यादव, दान बहादुर मधुर,पूजा मिश्रा, निर्मला यादव,शांति प्रकाश पटेल, जगदीश यादव, अभय राज यादव, राम अवध पाल, नाटे चौधरी, कुलदीप यादव,कृष्ण राज, प्रभाकर कृष्णा, किसन यादव, शंकर लाल, सुशील यादव, श्याम सूरत सरोज, हरिश्चंद्र, आदि लोग शामिल रहे।

मेजा खास पोस्ट आफिस में पैसा निकालने आए युवक की बाइक चोरी

मेजा। मेजाखास स्थित पोस्ट आफिस में अपने दादा को लेकर पैसा निकालने आए एक युवक की बाइक चोरी हो गई। बाइक पोस्ट आफिस के परिसर में खड़ी थी। भुक्तभोगी ने मेजा कोतवाली में तहरीर देकर कार्यवाही किए जाने की गुहार लगाई है। मिली जानकारी के अनुसार मांडा थाना क्षेत्र के मिसिरपुर गांव निवासी दिलीप कुमार पुत्र मथुरा प्रसाद ने मेजा कोतवाली में तहरीर देकर लिखा है कि वह सोमवार को अपने दादा के साथ पैसा निकालने के लिए मेजाखास स्थित पोस्ट आफिस में आया हुआ था और पोस्ट आफिस परिसर में बाइक खड़ी कर अंदर चला गया। कुछ देर बाद पैसे निकालने के पश्चात जब वह बाहर आया तो बाइक गायब थी। वह काफी खोजबीन किया और लोगों से पुछ तांछ भी किया लेकिन बाइक का कहीं कुछ पता नहीं चला। भुक्तभोगी ने पुलिस को तहरीर देकर अपनी बाइक बरामद किए जाने की गुहार लगाई है।

पकरी सेवार गंगा घाट पर निमार्णाधीन केंद्र सरकार की जल जीवन मिशन योजना में हो रही व्यापक अनियमितता

मेजा और कोरांव तहसील के 453 गांवों के परिवारों को होनी है जलापूर्ति कार्यदाई संस्था निर्माण में घटिया मैटेरियल के प्रयोग पर गंभीर नहीं भविष्य में दूरगामी योजना पर बना रहेगा संशय

मेजा। केंद्र सरकार की जल जीवन मिशन योजना के निर्माण में मानकों की अनदेखी से इस प्रोजेक्ट की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे हैं। योजना के लिए बनाए जा रहे इंटक वेल में भारी अनियमितता की जा रही है।निर्माण के लिए मौके पर गिराए गए मैटिरियल घटिया किस्म के हैं।इससे जलापूर्ति को लेकर भविष्य में कई तरह की दिक्कतें होना निश्चित है। उल्लेखनीय है कि क्षेत्र के पकरी सेवार गंगा घाट पर केंद्र सरकार की हर घर जल ,जीवन मिशन योजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस योजना से मेजा और कोरांव तहसील के 453 गांवों के 861453 परिवारों को जलापूर्ति की जानी है। 40 हजार करोड़ से अधिक लागत वाली इस योजना के निर्माण में घटिया मैटिरियल का इस्तेमाल किया जा रहा है।कार्यदायी संस्था मेसर्स गजा कम्पनी के जिम्मेदार इस निर्माण को लेकर गम्भीर नही हैं।इसकी मॉनिटरिंग करने वाले जल निगम के अधिकारी भी शिकायत के वावजूद इस पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहे हैं। पकरी सेवार के प्रधान प्रतिनिधि मिथिलेश पांडेय एवं कई अन्य समाजसेवी लोग इस योजना की अनियमितता का शुरू से विरोध कर रहे हैं। कई बार इसका निर्माण कार्य बंद हो चुका है लेकिन अधिकारियों से क्लीन चिट लेकर योजना निर्माण को पुनः आगे बढ़ाया गया लेकिन शिकायत कताओं को संतुष्ट नही किया गया। बताया गया कि योजना के लिए बनाए जाने वाले इंटक वेल निर्माण में लगने वाली सरिया का गैप बढ़ा दिया गया है।इसके गैप को भरने के लिए सोन नदी के बालू की जगह गंगा नदी की बालू से भरा जा रहा है।वेल निर्माण में प्रयोग होने वाली गिट्टी भरत कूप की जगह घटिया किस्म की प्रयोग की जा रही है।योजना के फाउंडेशन में की जा रही गड़बड़ी का गम्भीर असर भविष्य में पड़ना तय है। गौरतलब है कि स्वच्छ जलापूर्ति के लिए निमार्णाधीन यह योजना गंगा नदी के सतही जल बेस पर आधारित है।नदी के जल को इंटक वेल में लिया जाएगा।यहाँ से पानी को फिल्टर कर स्टोर टैंक में भेजा जाएगा।यहाँ बनाए गए दो स्टोर टैंक से पाइप लाइन के जरिए जलापूर्ति की जाएगी।यदि इंटक वेल का फाउंडेशन कमजोर व घटिया होगा तो इस दूरगामी योजना के भविष्य पर संशय बना रहेगा।लोगों ने घटिया निर्माण की जांच कर की जा रही गड़बड़ी को समय रहते दुरुस्त करने की मांग की है।

जमीनी कब्जा को रोकने गई पुलिस पर हमला

प्रयागराज। कौंधियारा के भभोकर गाँव में ग्रामीणों ने पुलिस पर किया पथराव। मंगलवार शाम 5 बजे अवनीश कुमार पुत्र स्व भरत जी शुक्ला के जमीन पर गाँव के दबंग व्यक्ति द्वारा जबरन छप्पर डाल कर खेत में बोरिंग करवा रहे थे जानकारी होने पर उक्त व्यक्ति बोरिंग का कार्य मना किये तो वहां मौजूद महिलाएं पीड़ित को भद्दी - भद्दी गालिया देते हुये मारने की धमकी दी पीड़ित ने इसकी शिकायत पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने काम रोकवने के लिये मना किया तो महिलाओं ने पुलिस के ऊपर पथराव कर दिया। जिसमें हल्का दरोगा ओम प्रकाश समेले के सिर में पत्थर लगने से चोट आई है साथ में सिपाही को भी हल्का चोट आई है। पुलिस ने अपनी जान बचाते हुये थाने पहुचकर एसीपी कौंधियारा विवेक यादव को सूचित किया मौके पर पहुंचे एसीपी कौंधियारा ने घूरपुर फोर्स को बुला कर पुनः घटना स्थल पर पहुंच कर मामला शांत करवाया और पथराव करने वालों के ऊपर कार्यवाही करने की बात कही।

विद्युत पोल से टकराई डंफर, कोई हताहत नहीं

सहसों। प्रयागराज गोरखपुर राजमार्ग पर स्थित राम जानकी मंदिर सहसों के समीप सड़क के डिवाइडर पर लगे ग्यारह हजार के विद्युत पोल में मंगलवार की भोर पौने पांच बजे प्रयागराज से फूलपुर की तरफ जा रही अनियंत्रित डंफर ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे विद्युत के दो पोल तार सहित उखड़ कर राजमार्ग पर फैल गया। गनीमत तो यह रहा कि तत्काल विद्युत आपूर्ति बंद हो गई अन्यथा एक बड़ा हादसा हो सकता था। डंफर चालक ने निडरता एवं बहुत ही चालाकी से डंफर को पीछे कर डंफर लेकर भाग गया। मौके पर चाय की दुकान पर चाय पी रहे तेज प्रताप सिंह लल्लू एवं सुनील माली आदि ने दौड़कर पीछे से आ रहे वाहनों को हाथ देकर रोका तथा राजमार्ग पर फैले तार को बांस के डंडे के सहारे किनारे किया। इसके अतिरिक्त वहां पर रखे गए बैरियर को लगाकर राजमार्ग पर राहगीरों का बचाव किया। सड़क पर फैले तार से कई बाइक सवार फंसकर गिर गए गति धीमी होने के कारण चोटें नहीं आई। स्थानीय लोगों ने विद्युत तार एवं पोल के गिरे होने की सूचना विद्युत विभाग को दे दी। जानकारी होने पर विभाग के कर्मचारी मौके पर पहुंचकर सायंकाल होते होते विद्युत पोल एवं तार को ठीक किया तथा विद्युत सप्लाई सुचारू रूप से व्यवस्थित हो सकी।

प्रापर्टी डीलर पर जानलेवा हमला, आधा दर्जन हमलावरों ने दिया वारदात को अंजाम

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के पहाड़ीपुर गांव में मंगलवार की देर शाम स्कॉर्पियो से पहुंचे आधा दर्जन हमलावरों ने एक प्रॉपर्टी डीलर के ऊपर अचानक जानलेवा हमला कर दिया। प्रॉपर्टी डीलर की चीख पुकार सुनकर वहां अफरातफरी मच गई। भीड़ जुटने के पहले हमलावर भाग निकले। मौके पर पहुंचे परिजनों ने घायल को बेहोशी हालत में एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी ली और हमलावरों की तलाश में जुट गई। रामबाबू मिश्रा (45) पुत्र राम बहादुर मिश्रा निवासी ककरा पिछले कई वर्षों से झूंसी के हवासपुर में रहकर प्रॉपर्टी का काम करते हैं। मंगलवार शाम 7:30 बजे सब्जी लेकर अपनी बुलेट से हवासपुर से ककरा गांव जा रहे थे। रास्ते में पहाड़ीपुर पानी की टंकी के सामने एक दुकान पर रुक कर गुटका ले रहे थे, तभी काले रंग बिना नंबर प्लेट की स्कॉर्पियो से पहुंचे आधा दर्जन से अधिक हमलावरों ने रामबाबू मिश्रा पर सरिया व राड से ताबड़तोड़ हमला बोल दिया। राम बाबू की चीख-पुकार सुनकर ग्रामीण जब तक बचाने पहुंचते हमलावर रामबाबू को बुरी तरह घायल कर भाग निकले। इंस्पेक्टर पंकज कुमार राय ने बताया कि रामबाबू मिश्र की ओर से आकाश, विकास, सूरज पुत्रगण नंदलाल दुबे उर्फ किन्नू, राज मिश्रा पुत्र विद्याकांत व विद्याकांत समेत तीन अन्य अज्ञात के विरुद्ध तहरीर दी गई। गोली चलने की सूचना गलत है।

न्यूज झरोखा

शंकरगढ़ में जेके सीमेंट कंपनी ने शुरू किया उत्पादन

शंकरगढ़। जेके सीमेंट कंपनी ने मंगलवार को अपने एक नये प्लांट का शुभारंभ किया। यह प्लांट शंकरगढ़ क्षेत्र के ग्रामसभा लेदर में स्थित है। मंगलवार को उद्घाटन मौके पर कंपनी के वाइस चेयरमैन निधिपति सिंघानिया एवं सीईओ माधव कृष्ण सिंघानिया भी मौजूद रहे। पूरे विधि-विधान से पूजन-अर्चन के उपरांत प्लांट में उत्पादन का श्रीगणेश किया गया। कंपनी के सीईओ माधवकृष्ण सिंघानिया ने जेके सीमेंट कंपनी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रयागराज यूनिट हेड संगीत नेमा ने बताया कि इस कंपनी में लगभग 250 स्थानीय लोगों को रोजगार दिया जा रहा है। इस प्लांट की स्थापना से युवाओं को काम के लिए बाहर नहीं जाना होगा। इसके अलावा सीएसआर के माध्यम से क्षेत्र में पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। संगीत नेमा ने बताया कि कंपनी प्रतिवर्ष 20 लाख टन सीमेंट निर्यात करती है। आने वाले समय में यह क्षमता बढ़ाई जाएगी। इस मौके पर एचआर हेड प्रवीण मिश्र, विवेक सिंह, राजेश द्विवेदी,आशीष मिश्रा आदि मौजूद रहे।

बाउण्ड्री वाल बनाकर रास्ते को किया जा रहा अवरूद्ध

सहसों। क्षेत्र के चन्दरपुर उर्फ बसमहुआ गांव में आम रास्ते पर कुछ दबंग किस्म के लोगों द्वारा बाउंड्री वॉल खींचकर रास्ता अवरुद्ध कर किया जा रहा है। जिससे लोगों को आवागमन में कठिनाई हो रही है। गांव निवासी पीड़ित मनोज कुमार पांडे ने मामले के संबंध में मुख्यमंत्री को प्रार्थना पत्र देकर शिकायत किया है कि वह अपनी धूमधरी में मकान बनाकर रहते हैं। उनके मकान से आने-जाने वाले रास्ते पर गांव के ही कुछ दबंग किस्म के लोगों ने जबरदस्ती ढंग से बाउंड्री वॉल खींचकर रास्ता को अवरुद्ध कर दिया है। जिससे वह व उनके अन्य परिवार के लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हैं। जबकि संबंध में गत दिनों तहसील प्रशासन को प्रार्थना पत्र देकर अवगत भी कराया गया है। बावजूद आदेशित संबंधित प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचे। जिससे दबंगों ने पूरी बाउंड्री वॉल खड़ी कर दी है। बाउंड्री वॉल खड़ी होने से लोगों को रास्ते में आवागमन की घोर कठिनाई उत्पन्न हो रहा है।

उ.प्र.सहकारी ग्राम विकास बैंक प्रदेश चेयरमैन का जोरदार स्वागत

सहसों। उत्तर प्रदेश सहकारी ग्राम विकास बैंक लिमिटेड के प्रदेश चेयरमैन एवं दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री संत राज यादव जी का गोरखपुर से प्रयागराज जाते समय बैंक शाखा फूलपुर के सामने रोककर शाखा अध्यक्ष बीरेन्द्र बहादुर सिंह एवं शाखा प्रबंधक अमरनाथ सिंह सहित आदि कर्मचारियों ने माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर उन्हें गुलदस्ता एवं बुके भेंटकर सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर प्रदेश चेयरमैन ने सभी का आतिथ्य स्वीकार करते हालचाल जाना एवं बैंक शाखा के उपलब्धियों के विषय में जानकारी हांसिल करते हुए बैंक शाखा के कार्य प्रणाली से प्रसन्नता व्यक्त की। इस मौके पर बैंक शाखा के वरिष्ठ लिपिक शैलेश कुमार यादव, खजांची शैलेंद्र कुमार सिंह, सहायक फिल्ड ऑफिसर जीत लाल मौर्य व संदीप कुमार सिंह एवं विनोद कुमार यादव सहित आदि कर्मचारी स्वागत करते उपस्थित रहे।

समर बहादुर सिंह इंटर कॉलेज के संस्थापक की 10 वीं पुण्यतिथि मनाई गई

जंघई। समर बहादुर सिंह इंटर कॉलेज गरियांव के संस्थापक श्रद्धेय स्वर्गीय समर बहादुर सिंह की दसवीं पुण्य तिथि श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनके बड़े पुत्र योगेश सिंह ने कहा कि पिताजी का जीवन निः स्वार्थ सेवा में व्यतीत हुआ उन्होंने जीवन के 25 वर्ष फलाहार पर व्यतीत किए तथा हमेशा गरीब और दुखियों की मदद करते हुए धर्म कार्य में संलग्न रहे।इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख बादशाहपुर सत्येंद्र सिंह फंटू, भूमि विकास बैंक की अध्यक्ष पुष्पा शुक्ला, हाईकोर्ट स्टैंडिंग काउंसिल अजय सिंह, हरिशंकर तिवारी, राकेश शुक्ला, मंडल अध्यक्ष भाजपा सुरेंद्र विक्रम सिंह सनी, चंद्रमणि तिवारी, भाजपा नेता विपुल सिंह, राजन सिंह, वीरेंद्र सिंह सम्राट, पूर्व सांसद प्रतिनिधि राजेश सिंह, चंद्रेश गुप्ता, महिला मोर्चा की मंडल अध्यक्ष नीलम गुप्ता सहित क्षेत्र के तमाम संभ्रांत जन उपस्थित रहे एवं श्रद्धा सुमन अर्पित किया?। इस अवसर पर विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के संचालक एवं भाजपा महामंत्री रमेश प्रताप सिंह प्रधान ने सभी उपस्थित सम्मानित जनों का आभार प्रकट किया।

दलित किशोरी को जाति सूचक गालियां देते हुए मारा पीटा मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। खेत में बकरी चली जाने पर एक दबंग ने दलित की पुत्री को मारा पीटा और जाति सूचक गालियां दी। पुलिस ने एक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय ख्वाजा निवासी वीरेंद्र कुमार पुत्र बाबूलाल पासी का आरोप है कि उसकी दस वर्षीय पुत्री आंचल बकरी चरा रही थी।खेत में बकरी चली जाने पर उस की पुत्री को मारा पीटा गया और जाति सूचक गालियां दी गई। वीरेंद्र कुमार ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर गांव के ही फारूक पुत्र रऊफ के खिलाफ गाली गलूज,मार पीट तथा एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

ऊंचडीह बाजार में पेयजलपूर्ति की पाइप लाइन टूटने से सड़क पर बह रहा है पानी जिम्मेदार बेखबर

मेजा। मेजा तहसील क्षेत्र के ऊंचडीह बाजार में स्थित यूपी ग्रामीण बैंक के सामने जलनिगम की पाइप लाइन कई जगह से टूट गई है जिससे सड़क कटकर बिखर गई हैं।

उल्लेखनीय है कि सिरसा टू दिघिया मार्ग पर ऊंचडीह बाजार में स्थित यूपी बैंक आफ बडौदा के सामने सड़क पर भारी जलभराव होने के कारण राहगीर और बाजार में स्थित लोगो को आने जाने में घोर परेशानियां हो रही हैं इसमें साइकिल सवार और बाइक सवार इस रास्ते से गुजरने के दौरान कई लोग फिसल कर जहां जख्मी हो गए हैं। वही पास पड़ोस के गांव के लोगों का हर दिन वहा आना जाना है। एक ओर सूबे के मुखिया गांव गांव अभियान चलाकर जल जीवन मिशन योजना के तहत पानी टंकी का निर्माण करा रही है तो दूसरी ओर लाखो रुपए की जगह जगह बिछाई गई पेयजलापूर्ति पाइप लाइन टूटकर बिखर गई है जिससे पूरा पानी रोड पर बह रहा है। सड़के क्षतिग्रस्त हो गई है। किन्तु संबंधित ग्राम प्रधान और उच्च अधिकारी इस मामले को संज्ञान नही ले रहे है। गौरतलब है कि यदि मामले को संज्ञान में लेकर अविलंब टूटी हुई पाइप लाइन की मरम्मत नहीं कराई गई तो किसी दिन क्षतिग्रस्त सड़क पर पानी भरा रहने से कोई बड़ा हादसा होने की प्रबल आशंका बनी हुई है।

मण्डलीय समीक्षा बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

मण्डलायुक्त ने वृक्षारोपण अभियान से सम्बंधित स्थलों का चयन, गड्ढ़ा खुदायी तथा अन्य तैयारियों को समय से सुनिश्चित किए जाने के दिए निर्देश

मण्डलायुक्त ने आईजीआरएस पोर्टल पर दर्ज होने वाली शिकायतों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय-सीमा में अनिवार्य रूप से निस्तारित किए जाने के दिए निर्देश

शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही एवं डिफाल्टर पाये जाने पर सम्बंधित अधिकारियों के विरूद्ध की जायेगी कार्यवाही

मण्डलायुक्त ने अभियान चलाकर गौवंश आश्रय स्थलों के निकट स्थित ग्राम समाज की भूमि पर हरा चारा बोये जाने के दिए निर्देश

01 जुलाई से चलने वाले संचारी रोग अभियान के तहत साफ-सफाई, नालियों की सफाई, जल-जमाव को रोकने तथा झाड़ियों की कटाई का कार्य समय से सुनिश्चित किए जाने के दिए निर्देश

हर ब्लाक में 2 मॉडल गांव विकसित करने तथा सामुदायिक शौचालय की साफ-सफाई के साथ निरंतर क्रियाशीलता बनाये रखने के दिए निर्देश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में मंगलवार को वृक्षारोपण अभियान, सीएम डैशबोर्ड, विकास कार्यक्रमों, निर्माण कार्यों के प्रगति की मण्डलीय समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मण्डलायुक्त ने वृक्षारोपण अभियान की तैयारियों की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को तत्काल वृक्षारोपण से सम्बंधित स्थलों का चयन करने तथा गड्ढ़ा खोदने के साथ-साथ अन्य तैयारियों को समय से सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने वृक्षारोपण अभियान को सुव्यस्थित ढंग से किए जाने एवं पौधों की सुरक्षा से सम्बंधित कार्ययोजना बनाते हुए लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत वृक्षारोपण की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए अभियान को सफल बनाये जाने का निर्देश दिया है। आईजीआरएस पोर्टल से सम्बंधित शिकायतों की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को पोर्टल पर दर्ज होने वाली शिकायतों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित किए गए समय-सीमा में अनिवार्य रूप से निस्तारित किए जाने के निर्देश दिए है।

उन्होंने कहा है कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता नहीं होनी चाहिए। उन्होंने शिकायतों के निस्तारण के पश्चात शिकायतकर्ता से बातचीत करके फीडबैक भी लेने के लिए कहा है। जमीन से सम्बंधित शिकायतों के निस्तारण हेतु मौके पर जाकर दोनो पक्षों को सुनते हुए नजरी नक्शा बनाकर प्रकरण को निस्तारित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में शिकायतों के निस्तारण में डिफाल्टर नहीं होनी चाहिए। शिकायतों के निस्तारण में डिफाल्टर पाये जाने पर सम्बंधित के विरूद्ध कार्यवाही सुनिश्चित होगी। शिकायतों के निस्तारण की समीक्षा में उपजिलाधिकारी कुण्डा के द्वारा शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही बरतने एवं डिफाल्टर पाये जाने पर उनसे स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिए है। मण्डलायुक्त ने सभी जिलाधिकारियों को शिकायतों के निस्तारण में डिफाल्टर होने वाले अधिकारियों का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए दोषी पाये जाने पर उनके विरूद्ध कार्यवाही करने के लिए कहा है। मण्डलायुक्त ने गोवंश आश्रय स्थलों की समीक्षा करते हुए बरसात में होने वाली बीमारियों से बचाव हेतु गोवंशों का शत-प्रतिशत टीकाकरण सुनिश्चित किए जाने का निर्देश सभी पशुचिकित्साधिकारियों को दिया है। उन्होंने हरे चारे की व्यवस्था के लिए गोवंश आश्रय स्थलों के आस-पास स्थिति ग्राम समाज की भूमि पर अभियान चलाकर हरा चारा बोये जाने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों पर भूसा-चारा की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के साथ-साथ जल-जमाव की समस्या को भी समय से दूर किए जाने के निर्देश दिए है। मण्डलायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए 01 जुलाई से चलने वाले संचारी रोग अभियान के तहत साफ-सफाई, झाड़ियों की कटाई तथा नालियों की सफाई, जल-जमाव रोकने हेतु समय से कार्यवाही सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने डायरिया से बचाव हेतु साफ-सफाई के साथ-साथ प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर ओआरएस घोल की व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। मण्डलायुक्त ने बच्चों का शत-प्रतिशत टीकाकरण सुनिश्चित किए जाने के साथ-साथ पोषाहार वितरण की कार्यवाही भी समय से सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने जननी सुरक्षा योजना कार्यक्रम के तहत लाभार्थी महिलाओं को शत-प्रतिशत प्रोत्साहन राशि का भुगतान सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने बच्चों को विटामिन ए, हेपेटाइटस बी तथा पोलियो ड्राप की खुराक शत-प्रतिशत पिलाये जाने के निर्देश दिए है। मण्डलायुक्त ने जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुए खण्ड विकास अधिकारियों से सड़कों के कटिंग को यथास्थिति में लाये जाने की स्थिति की जांच कराने के बाद ही हैण्डओवर की कार्यवाही सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने पंचायतीराज विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए उप निदेशक पंचायत को हर ब्लाक में 2 मॉडल गांव विकसित करने तथा सामुदायिक शौचालय को साफ-सफाई के साथ निरंतर क्रियाशील बनाये रखने के निर्देश दिए है। विद्युत विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने विभाग के द्वारा योजनाओं से सम्बंधित कार्यों के लिए पैसा जमा किए जाने के पश्चात तत्काल विद्युत कनेक्शन दिए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा है कि विभाग के द्वारा पैसा जमा किए जाने के बावजूद भी यदि विद्युत कनेक्शन देने में लापरवाही पायी गयी तो सम्बंधित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने स्कूल चलों अभियान की समीक्षा करते हुए सभी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को अधिक से अधिक बच्चों का स्कूलों में प्रवेश सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिए है।

समाज कल्याण विभाग, दिव्यांगजन विभाग, पिछड़ा वर्ग विभाग के अधिकारियों को लाभार्थियों का शत-प्रतिशत सत्यापन कराते हुए उन्हें लाभान्वित कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित मण्डलीय अधिकारियों को मुख्यमंत्री डैशबोर्ड/विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में लक्ष्य के सापेक्ष अपेक्षित प्रगति लाये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा है कि लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति खराब पाये जाने पर सम्बंधित अधिकारियों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जायेगी। इस अवसर पर जिलाधिकारी प्रयागराज नवनीत सिंह चहल, जिलाधिकारी फतेहपुर श्रीमती सी इंदुमती, जिलाधिकारी प्रतापगढ़ संजीव रंजन, जिलाधिकारी कौशाम्बी राजेश कुमार राय, मुख्य विकास अधिकारीगणों के साथ-साथ अपर आयुक्त एवं संयुक्त उपायुक्त सहित सम्बंधित विभागों के मण्डलीय अधिकारी उपस्थित रहे।

पूर्व सभासद पर चली गोली

झूंसी। स्थानी थाना क्षेत्र के कटका रोडवेज वर्कशॉप के पास बाइक से आ रहे पूर्व सभासद मो. नाज पर बाइक सवार बदमाशों ने फायर कर दिया। जिसमें वह बाल बाल बच गए। मो. नाज ने बताया कि मंगलवार की रात वह अंदावा से पेट्रोल भरवा कर बाइक से घर लौट रहे थे तभी रोडवेज वर्कशाप के पास बाइक से हेलमेट लगाकर आये दो युवको में पीछे बैठे युवक ने गोली चला दी। मामले की सूचना मिलते ही पहुची पुलिस ने आसपास लोगों से पूछताछ की। पीड़ित ने अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी है।

रोजगार मेले में 51 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

प्रयागराज। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, प्रयागराज परिसर में दिनांक 25.06.2024 को एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न कम्पनियों द्वारा कुल 51 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। रोजगार मेले में कुल 84 बेरोजगार अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में प्र0 सहायक निदेशक (सेवा0) एवं कार्यालय के मेला प्रभारी अधिकारी प्रशांत तथा मेला प्रभारी मारूफ अहमद व कार्यालय के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

नए पुलिस कमिश्नर ने संभाला चार्ज

अखंड भारत संदेश

महाकुंभ के लिए पुलिसवालों को दी जाएगी ट्रेनिंग
माफियाओं के खिलाफ चलेगा अभियान

प्रयागराज। प्रयागराज के नए पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा ने मंगलवार को चार्ज संभालने के बाद बैठक की। इस दौरान महाकुंभ 2025 पर को लेकर चर्चा की। साथ ही उन्होंने मेले की तैयारियों को प्राथमिकता से पूरा करने पर जोर दिया है।

पुलिस कर्मियों को दी जाएगी खास ट्रेनिंग :

उन्होंने कहा, देश विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं से अच्छा व्यवहार करने को लेकर पुलिस कर्मियों को खास ट्रेनिंग दी जाएगी। इसको लेकर एक लिस्ट तैयार की जाएगी। जिसमें साफ सुथरी छवि रखने वाले पुलिसकर्मियों को रखा जाएगा।

माफिया और आपराधिक गैंग के खिलाफ चलेगा अभियान :

उन्होंने कहा, महाकुंभ की सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को लेकर अभी से प्लानिंग की जा रही है। सीपी ने बताया, प्रयागराज में माफिया, आपराधिक गैंग के खिलाफ जो अभियान चल रहा था, वह जारी रहेगा। इसको लेकर उन्होंने समीक्षा करने की बात कही। उन्होंने कहा, माफिया और गैंग पर लगाम लगानी जरूरी है।

टीम भावना से करेंगे काम :

उन्होंने कहा कि थाने पहुंचे फरियादियों से अच्छा व्यवहार हो, लोगों की समस्याओं को तत्काल दूर किया जाए। अपराधियों पर कार्रवाई में लापरवाही न हो इसे लेकर मॉनीटरिंग की जाती रहेगी। सीपी साफ किया कि पुलिस अब महाकुंभ की तैयारियों में जुटने जा रही है।नए पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा ने चार्ज संभालने के बाद मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए क्राइम कंट्रोल को लेकर प्लानिंग पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि डीसीपी सिटी दीपक भूकर, डीसीपी गंगा नगर अभिषेक भारती और डीसीपी यमुना नगर श्रद्धा पांडेय का कार्य प्रयागराज में काफी अच्छा है। हमारी टीम मजबूत है। आगे भी टीम भावना के साथ पुलिस फोर्स काम करेगी।

डाक विभाग के इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में मात्र 520 रुपए से 799 रुपए में होगा 10 लाख से 15 लाख का दुर्घटना बीमा : पोस्टमास्टर जनरल

प्रयागराज। महंगे प्रीमियम पर बीमा करवाने में असमर्थ लोगों के लिए डाक विभाग का इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक विशेष दुर्घटना सुरक्षा बीमा लेकर आया है, जिसमें वर्ष में महज 520 और 799 रुपए के प्रीमियम के साथ लाभार्थी का क्रमशः 10 और 15 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा होगा। एक साल खत्म होने के बाद अगले साल यह बीमा पुनः रिन्यू करवाना होगा । इसके लिए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में लाभार्थी का खाता होना अनिवार्य है। उक्त जानकारी प्रयागराज क्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने दी। डाक विभाग इसके लिए 27-28 जून 2024 को प्रयागराज क्षेत्र में विशेष अभियान चलायेगा। पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक और विभिन्न बीमा कंपनियों के मध्य हुए एक एग्रीमेंट के तहत 18 से 65 वर्ष आयु के लोगों को यह निजी दुर्घटना बीमा

सुरक्षा मिलेगी । इसके तहत बीमा कवर में दुर्घटना से मृत्यु, स्थाई या आंशिक / पूर्ण अपंगता, अंग विच्छेद या पैरालाइज्ड होने पर क्रमशः 10 और 15 लाख रुपए का कवर मिलेगा । साथ ही साथ इस बीमा में दुर्घटना होने की स्थिति में हॉस्पिटल में भर्ती, आई.पी.डी खर्च, ओ.पी.डी एवं दैनिक भुगतान की भी सुविधा मिलेगी। इस बीमा में डॉक्टर से पोषण संबंधी सलाह एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए परामर्श की भी सुविधा होगी । उपरोक्त सभी लाभों के अलावा दो बच्चों की पढ़ाई के लिए रूपया एक लाख तक का खर्च, दस दिन अस्पताल में रोजाना का एक हजार खर्च, किसी अन्य शहर में रह रहे परिवार हेतु ट्रांसपोर्ट का 25,000 रूपए तक का खर्च और मृत्यु होने पर अंतिम संस्कार के लिए 5,000 तक का खर्च मिलेगा ।निदेशक डाक सेवाएँ गौरव श्रीवास्तव ने कहा कि इसके लिए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में लाभार्थी का खाता होना अनिवार्य है। प्रीमियम खाता मात्र ?200/- से खोला जा सकता है । इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए ग्राहक का आधार नंबर एवम मोबाइल नंबर होना अनिवार्य है। ग्राहक का खाता बिना किसी दस्तावेज के केवल बायोमेट्रिक के आधार पर तुरंत खुल जाता है एवं साथ ही साथ दुर्घटना बीमा का भी लाभ बिना किसी दस्तावेज जमा कराए लिया जा सकता है। प्रीमियम खाता में किसी भी प्रकार का डोर स्टेप चार्ज नहीं देना होगा, तथा इसके साथ ही बिजली बिल भुगतान और कैशबैक भी प्राप्त किया जा सकता है। घर बैठे आईपीपीबी एप के माध्यम से सुकन्या, पीपीएफ, आर डी, पीएलआई आदि का ऑनलाइन जमा किया जा सकता है। आईपीपीबी प्रीमियम खाता खोलने पर आधार सीडिंग/डीबीटी मैपिंग की भी सुविधा उपलब्ध होगी जिसके तहत खाता धारक भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं (किसान सम्मान निधि, विधवा पेंशन आदि) में मिलने वाले लाभ का भुगतान सरलता से अपने खाते के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं । साथ ही साथ एप्स के माध्यम से कोई भी खाता धारक या भारत सरकार के योजनाओं का लाभार्थी घर बैठे 10,000 तक की धनराशि नगदी के रूप में निकासी कर सकता है। प्रयागराज क्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ गौरव श्रीवास्तव ने बताया कि इस दुर्घटना बीमा सुविधा में पंजीकरण के लिए लोग अपने इलाके के डाकिया या नजदीकी डाकघर में संपर्क कर सकते हैं।

हाईकोर्ट समाचार

32 आपराधिक केस, अब जमानत पर सरकार से जवाब मांगा

कानपुर का मामला, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा- राज्य सरकार जवाब दे क्या है पूरा मामला

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 32 आपराधिक मामलों में अभियुक्त बनाए गए कानपुर नगर के विवेक त्रिपाठी की जमानत अर्जी पर राज्य सरकार से 3 हफ्ते में जवाब मांगा है। कोर्ट ने कहा है कि हलफनामे में पुलिस यह खुलासा करें कि याची के खिलाफ कुल कितने आपराधिक केस दर्ज हैं और कितने में उसे जमानत मिल चुकी है।हाईकोर्ट जमानत अर्जी की अगली सुनवाई 29 जुलाई को करेगी। यह आदेश न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल ने विवेक त्रिपाठी की अर्जी की सुनवाई करते हुए दिया। जमानत अर्जी में कहा गया है कि याची 19 जुलाई 2016 से लगातार जेल में बंद है। इस समय वह झांसी जेल में बंद हैं। याची के खिलाफ कुल 32 एफआईआर दर्ज हैं। वर्ष 2015-16 मे उसके खिलाफ 12 एफआईआर दर्ज की गईं और शेष केस जेल में रहते हुए एक जैसे आरोप लगाते हुए दर्ज किए गए है। जिनमें से चार गैंगस्टर एक्ट के तहत है। प्रश्नगत केस की एफआईआर पुलिस स्टेशन गुजैनी में धारा 3(1) गैंगस्टर एक्ट के अंतर्गत दर्ज हुआ है। सह अभियुक्त सुमित अवस्थी 2015 से ललितपुर जेल में बंद है। अन्य सह अभियुक्त आनंद त्रिपाठी उन्नाव जेल में बंद हैं।

जमानत होते ही दर्ज हो जाता है दूसरा केस

याची ने जमानत अर्जी में कहा है कि जमानत होते ही दूसरा केस दर्ज कर दिया जाता है जिससे अभियुक्त जेल से बाहर न आ सके। जो कि गैंगस्टर एक्ट का दुरुपयोग है। जबकि न तो अभियुक्त का कोई गैंग है और न ही वह किसी गैंग का सदस्य है। याची सहित सह अभियुक्तों पर धोखाधड़ी, जालसाजी व हत्या के प्रयास जैसे अपराध का आरोप है।

प्रा. विद्यालय में एक वर्ष से मिड डे मील न बनने से अभिभावको ने विद्यालय में मारा ताला

मऊआइमा। मऊआइमा विकास खंड के सेमरा वीरभानपुर स्थित प्राथमिक विद्यालय मे एक वर्ष से मिड डे मील नही बन रहा है। बच्चों को बिना खाना खाए ही घर वापस जाना पड़ रहा है। वही मंगलवार को अभिभावकों ने गेट का ताला बंद कर दिया। बताया जाता है कि प्रधानाअध्यापक प्रकाश चंद्र त्रिपाठी लगभग एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत हो गए । लोगों की माने तो रिक्त पद को लेकर वरिष्ठ शिक्षिका कल्पना मिश्रा को पदभार मिलना चाहिए था । पर असमर्थता जताने के बाद प्रधानाचार्य का पद किसी को नहीं दिया गया । जिसके कारण बच्चों के मिड डे मील नही बन रहा है। ग्राम प्रधान द्वारा जुलाई तक मिड डे मील बनवाया गया । उसके बाद पुनः बंद हो गया। ऐसी स्थिति में मध्यान्ह का भोजन न बनने के कारण विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को खाली पेट ही वापस जाना पड़ रहा है । जिसको लेकर लोगों में खासा आक्रोश है । वही ग्राम प्रधान कुसुम देवी द्वारा खंड शिक्षा अधिकारी समेत अन्य उच्च अधिकारियों की शिकायती पत्र देते हुए मिड डे मील की व्यवस्था कराए जाने की मांग की । हालांकि कई माह बीत जाने के बाद भी कोई समस्या का हल नहीं निकल सका है । वही मंगलवार को अभिभावकों ने प्राथमिक विद्यालय के गेट का ताला बंद कर दिया। और कहा जब तक मिड डे मील बनना शुरू नही होगा। तब तक गेट नही खोला जाएगा।

हॉस्टल छात्रों के गुटों में मारपीट के बाद पुलिस ने छात्रों को बनाया मुर्गा, मामला पहुंचा मानवाधिकार आयोग

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्व विद्यालय के सर सुंदर लाल हॉस्टल और हॉलैंड हॉल छात्रावास के छात्रों को मुर्गा बनाए जाने का मामला राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तक पहुंचा है। आयोग ने कार्रवाई के लिए कहा है। राज्य मानवाधिकार आयोग ने भी पुलिस को जांच को लेकर नोटिस जारी किया है। अब यह मामला चर्चा का विषय बन गया है। असल में एक और दो जून की रात डेढ़ से पांच बजे के बीच हॉलैंड हॉल और सर सुंदर लाल छात्रावास परिसर में छात्रों के दो गुटों में मारपीट, बवाल हुआ था। इसी के बाद पुलिस ने दबिश देकर मुर्गा बनाने की कार्रवाई की थी।

मारपीट, हंगामे के बाद पहुंची थी पुलिस : आरोप है कि हॉलैंड हॉल छात्रावास और सर सुंदर लाल छात्रावास में पहुंची पुलिस ने रविवार के दिन अधिकतर छात्र अपने कमरों में थे तभी पुलिस ने पहुंच सबको बाहर निकाल दिया। प्रत्येक कमरे से एक-एक छात्र को पकड़कर कॉमन हाल में ले जाया गया। इसके बाद सबको मुर्गा बनाया और फिर हाथ ऊपर करके खड़ा कर दिया। छात्रों ने अधिवक्ता गजेंद्र सिंह को सारी बातें बताईं।अधिवक्ता ने मामला राज्य मानवाधिकार आयोग में दर्ज कराया। इसके बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी मामला पहुंच गया। हालांकि इस मामले में पुलिस अधिकारी कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हैं।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर नगर आयुक्त चन्द्रमोहन गर्ग ने फरियादियों की सुनी समस्याएं

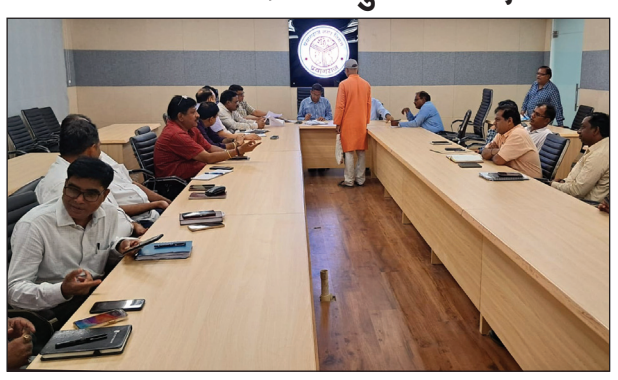

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम चन्द्रमोहन गर्ग द्वारा तथा अपर नगर आयुक्त दीपेन्द्र यादव द्वारा मंगलवार को नव निर्मित भवन में जन सुनवाई करते हुए नगर निगम में आये हुए फरियादियों की शिकायतों को सुना गया। जिसमें कुल 81 शिकायतें प्राप्त हुई। जनशिकायतों के अविलम्ब गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण कराये जाने हेतु नगर आयुक्त द्वारा सम्बन्धित अधिकरियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये, और यह भी निर्देशित किया गया कि गुणवत्ता पूर्ण शिकायतों का निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलिता न बरती जाय। सम्भव जन सुनवाई बैठक के दौरान अपर नगर आयुक्त अम्बरीश बिन्द तथा अरविन्द राय, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी/जन सम्पर्क अधिकारी पी0के0द्विवेदी, उप नगर आयुक्त अनुपम शुक्ला, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा0 अभिषेक सिंह, पशुधन अधिकारी डा0 विजय अमृत राज तथा मुख्य अभियन्ता विद्युत संजय कटियार, मुख्य अभियन्ता सतीश कुमार, जलकल महाप्रबंधक गौरव कुमार, मुख्य नगर लेखा परीक्षक बालेन्दू मिश्र, लेखाधिकारी अक्षय कुमार समस्त जोनल अधिकारी, समस्त अधिशाषी अभियन्ता निर्माण तथा विद्युत, सचिव नगर आयुक्त आदि अधिकारीगण उपस्थित रहें।

मुख्यमंत्री सिर्फ धनाढ्य प्रमुखों की ना सुनें कमजोर बीडीसी पर भी ध्यान दें : रेवती

अखंड भारत संदेश

करछना। पूर्व सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री सिर्फ धनाढ्य प्रमुखों की ना सुनें कमजोर बीडीसी पर भी ध्यान दें कि उनकी क्या समस्या है उनमें इतना आक्रोश क्यों है।उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से वार्ता कर वस्तुस्थिति से अवगत कराया जायेगा और सम्भव हुआ तो गरीब कमजोर बीडीसी सदस्यों से भी मुख्यमंत्री से वार्ता कराया जायेगा ताकि उनको पता चल सके कि ब्लाक के कार्यों में कितनी अनियमितता बरती गई हैं और उनके आय के श्रोत की भी जांच होनी चाहिये।यह जानकारी देते हुए सपा प्रदेश सचिव विनय कुशवाहा ने बताया कि जाति की राजनीति करने वाले एक दो बार सांसद विधायक बन सकते हैं आठ बार विधायक दो बार सांसद बनें कुंवर रेवती रमण सिंह जाति की नहीं जमात की राजनीति करते है इसलिए जब जमुनापार में ब्लाक प्रमुख बनाने की बात आई तो ब्राह्मण, ठाकुर,भूमिहार, पटेल, कोल को सपा का टिकट ही नहीं दिलाया बल्कि शासन सत्ता के खिलाफ कमजोर बीडीसी की हौसलाअफजाई के बदौलत उनको चुनाव भी जितवाया, लेकिन सभी निजी स्वार्थवश शासन सत्ता के साथ चले गए और बेचारे बीडीसी को ठेंगा दिखा दिया जिससे उनमें अपने प्रमुखों के प्रति आक्रोश है। उन्होंने कहा कि कुछ अकर्मण्यता वाले जनप्रतिनिधि हैं जिसके अंदर इतना सामर्थ्य नहीं है कि अपने पाटर्नर के अविश्वास प्रस्ताव में जीत दिला सके जबकि सीएम से लेकर डीएम तक उनके फिर भी उत्पीड़न का रोना लेकर भाग भाग कर मुख्यमंत्री के पास जा रहे है कि अविश्वास प्रस्ताव ना आने पाये उनको पता है कि जनता और बीडीसी में कितना आक्रोश है इसकी झलक अभी हुये लोकसभा चुनाव में हो गई।

गरीब कमजोर की लड़ाई हमेशा लड़ी और आगे भी लड़ेंगे

सीएम से लेकर डीएम उनके तो उत्पीड़न कौन कर रहा है

छंदबद्ध भारत का संविधान ग्रंथ का भव्य लोकार्पण जिसमें प्रयागराज की डॉ. मधु शंखधर, डॉ. व्रजेश शंखधर हुए गोल्डेन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से हुए सम्मानित

प्रयागराज। नई दिल्ली में भारतीय संविधान को सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से छंदबद्ध भारत का संविधान' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक भारतीय संविधान के अनुच्छेदों को छंदों में पिरोकर एक अद्वितीय और सृजनात्मक शैली में प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक को त्रयी संपादक मंडल प्रमुख सम्पादक ओमकार साहू मृदुल, सह संपादक डॉ. मधु शंखधर स्वतंत्र, डॉ.सपना दत्ता सुहासिनी के साथ 142 प्रबुद्ध साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस पुस्तक को ऐतिहासिक बनाया है।

इस कार्यक्रम का आयोजन हिन्दी भवन नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में देश की प्रतिष्ठित वरिष्ठ साहित्यकार व समाजसेवी डॉ० रमा सिंह, आज तक के एडिटर पंकज शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार शकुंतला कालरा, पूर्व न्यायाधीश डॉ० संतोष खन्ना, सुरेश सिंह

प्रियदर्शी, कवि एवं पत्रकार डॉ० चेतन आनंद एवं भारत प्रमुख गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस के आलोक कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने तथा द्वितीय सत्र की अध्यक्षता छन्द मर्मज्ञ डॉ. रामनाथ साहू ननकी ने किया। इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने प्रधान संपादक ओमकार साहू मृदुल और सह संपादक डॉ. मधु शंखधर स्वतंत्र व सपना दत्ता सुहासिनी को इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की कि यह भारतीय संविधान के ज्ञान को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने में सफल सिद्ध होगी। कार्यक्रम में लगभग 79 सृजनकारों ने अपने विचारों को लोगों के सामने रखा। प्रयागराज से डॉ. व्रजेश कुमार शंखधर, संगीता पाण्डेय तथा सिद्धार्थनगर से ऋषि कबीर मनहर इंदौर से सुषमा शर्मा, जबलपुर से अनुराधा पारे उज्जैन से रश्मि मोयदे, पुणे से पद्माक्षि शुक्ल आदि को इस ऐतिहासिक पुस्तक में सृजनकर अपना अमूल्य सहयोग देने के लिए प्रशस्ति पत्र, अलंकरण चिह्न व गोल्डेन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रधान संपादक ओंकार नाथ साहू मृदुल ने पुस्तक की प्रेरणा और उसकी संरचना पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह पुस्तक भारतीय संविधान के विभिन्न पहलुओं को और उसकी व्याख्या को सरल और सुलभ भाषा में प्रस्तुत करती है। सह संपादक डॉ. मधु शखधर ने पुस्तक के संपादन प्रक्रिया और इसमें शामिल किए गए शोध कार्य पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में संविधान के महत्वपूर्ण अनुच्छेदों की विस्तृत व्याख्या के साथ साथ उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को भी शामिल किया गया है। यह पुस्तक न केवल विधि के छात्रों और शोधकताओं के लिए बल्कि आम जनता के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। इसमें संविधान के प्रावधानों को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठकों को संविधान को समझने में सुविधा होगी। कार्यक्रम में डॉ, मधु शंखधर स्वतंत्र, डॉ, व्रजेश कुमार शंखधर, संगीता पाण्डेय को गोल्डन बुक ऑफ वर्ड रिकॉर्ड से सम्मानित किया गया। जिसके लिए पूरे शंखधर परिवार की तरफ से बधाई दी गई। डॉ, मधु शंखधर वर्तमान में सिद्धार्थनगर में बेसिक शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं उनके विभाग की तरफ से बधाई मिली। उनके माता पिता राजकुमार तिवारी व श्रीमती बीना तिवारी ने बेटी व दामाद को बधाई दी।

प्रतापगढ़ संदेश

आपातकाल का विरोध करने वाले सेनानियों को किया गया सम्मानित

भाजपा कार्यालय पर हुआ आपातकाल के विरोध में संगोष्ठी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में लोकतंत्र और राजनीति के सबसे दुखद और काले अध्याय को आपातकाल के समय अपने जीवन को परवाह ना करते उस तानाशाही का विरोध करने वाले लोकतंत्र रक्षक सेनानियों का सम्मान करके मनाया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि आपातकाल के समय 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक का 21 महीने की अवधि में भारत में आपातकाल घोषित था। मुख्य अतिथि जिला प्रभारी कौशलेंद्र पटेल ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबन्धित कर दिया गया। विधायक राजेंद्र मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री के बेटे संजय गांधी के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर पुरुष नसबंदी अभियान चलाया गया। जयप्रकाश नारायण ने इसे श्भारतीय इतिहास की सर्वाधिक काली अवधिश् कहा था। लोकतंत्र रक्षक सेनानी रामसेवक त्रिपाठी ने प्रकाश डालते हुए बताया सभी विपक्षी दलों के नेताओं और सरकार के अन्य स्पष्ट आलोचकों के गिरफ्तार किये जाने और सलाखों के पीछे भेज दिये जाने के बाद पूरा भारत सदमे की स्थिति में था। लोकतंत्र रक्षक सेनानी सियाराम ने कहा कि हम जिस हाल में थे उसी हाल में हमको पुलिस उठा ले गई, ना हमारी कोई बात सुनी और न ही हमारा गुनाह बताया बस हम को जेल में डाल दिया। संगोष्ठी समापन करते हुए रवि गुप्ता ने कहा कि आपातकाल के समय जिन विपक्षी दलों पर कांग्रेस ने बैन कर दिया था आज वो विपक्षी दल कांग्रेस की गोद में बैठ कर लोकतंत्र का पाठ पढ़ा रहे हैं।संचालन रवि गुप्ता ने किया। इस अवसर पर जिला महामंत्री राजेश सिंह, पवन गौतम, पूर्व जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र, पूर्व जिलाध्यक्ष देवानंद त्रिपाठी, पूर्व जिलाध्यक्ष के के सिंह, संतोष मिश्र, लोकतंत्र सेनानी राम सेवक त्रिपाठी, प्रेम चंद्र जायसवाल, डॉ ईश्वरनाथ शुक्ल, कमलेश बहादुर सिंह, विजय कुमार, सियाराम अमर वैश्य, विजय पाल सिंह, श्याम सुन्दर, भागवती प्रसाद सिंह, शिव प्रसाद, चिंतामणि, चंद्रिका बख्श, नन्दलाल चैरसिया, कमलेश शर्मा, संत बहादुर सिंह, जिला उपाध्यक्ष अशोक सरोज, छेदी राम सरोज, राघवेंद्र शुक्ल, साधू दुबे देवेश त्रिपाठी, अजय सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे।

समारोह में लोकतंत्र सेनानियों को सम्मानित करते सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य।

आरसेटी प्रशिक्षणार्थियों के लिए चिकित्सीय जागरुकता शिविर का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, गोंड़े में नगर की दंत चिकित्सक डॉ. अवंतिका पांडे, डॉ. गौरव पांडे तथा फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. क्षितिज श्रीवास्तव द्वारा स्वास्थ्य, शारीरिक व्यायाम, स्वास्थ्य सुरक्षा, विशेष रूप से डेंटल हाइजिन पर विशेष उद्बोधन दिया गया। डॉ. अवंतिका पाण्डेय ने डेंटल हाइजीन के प्रति जागरूकता के साथ बताया कि लोग ब्रश भी ठीक तरीके से नहीं करते और मुख अशुद्धियों से अन्य बीमारी जन्म लेतीं हैं। डॉ. गौरव पांडे ने कई प्रशिक्षणार्थी के मुख एवं दातों की जांच की। डॉ. क्षितिज श्रीवास्तव फिजियोथैरेपिस्ट ने कसरत के फायदे, महिलाओं में व्यायाम की आदत कम होना पर चर्चा की। निदेशक जितेंद्र प्रसाद ने कहा कि नियमित योग व्यायाम और स्वयं की स्वास्थ्य की सुरक्षा के प्रति सचेत रहना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन वित्तीय साक्षरता अधिकारी शिशिर खरे द्वारा किया गया। अमृता दुबे, शांतनु शेखर सिंह, संजीव कुमार, विनय विश्वकर्मा सहित प्रशिक्षक ब्यूटी पार्लर बबीता सिंह, प्रशिक्षक नैयर भी उपस्थित रहे।

जागरुकता शिविर में बोलतीं मुख्य अतिथि।

मो0 आसिफ के निधन पर प्रमोद व मोना ने जताया शोक

प्रतापगढ़। राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी एवं सीएलपी लीडर कांग्रेस विधायक आराधना मिश्रा मोना ने अल्पसंख्यक कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष अब्दुल माबूद उर्फ मुब्बी जी के छोटे बेटे और जिला अध्यक्ष अल्पसंख्यक कांग्रेस दानिश माबूद के भाई मो आसिफ के इन्तिक़ाल पर शोक व्यक्त किया और कहा दुख की इस घड़ी में ईश्वर परिवार जनों को शक्ति और संबल प्रदान करे। उधर कांग्रेस जिलाध्यक्ष डा0 नीरज तिवारी ने भी मो0 आसिफ के निधन पर शोक जताया है और उनके घर जाकर उनके परिवार से मिलकर उन्हें सांत्वना दी।

उम्मीद की आखिरी किरण साबित होता है बेंती का जनता दरबार

राजा भैया के जनता दरबार में सुनी गई सैकड़ों लोगों की समस्या

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। तिलमिलाती गर्मी के बावजूद भी बेंती महल मे राजा भैया का जनता दरबार आयोजित हुआ और सैकड़ों लोगों की समस्या हि नही सुनी गयी अपितु उनके समाधान के लिए सम्बन्धित विभाग के अधिकारी को फोन करके या पत्र लिखकर यथा उचित समाधान के लिए राजा भैया ने निर्देश दीय। नाली खड़ंजे का विवाद हो जमीनी बंटवारे का मामला, पुलिस प्रशासन का विषय हो आपसी विवाद तहसील के लोगों को जब अधिकारियों से न्याय नही मिल पाता तो राजा भैया के जनता दरबार मे उनकी समस्या सुनी जाती है।

आज बाघराय थाना क्षेत्र के दो दर्जन से अधिक लोगों ने जनता दरबार मे एक ही समस्या को लेकर आये थे, जहाँ एक कथित ठग मिजाज व्यक्ति ने दो दर्जन लोगों से उनका ट्रैक्टर ठेके पर लेकर उसे बेच डाला था। भागदौड़ और प्रशासनिक उयेक्षा से पीड़ित लोग जनता दरबार बड़ी संख्या मे पहुचे और राजा भैया से मुलाक़ात किया। सभी ने उक्त व्यक्ति के खिलाफ एक सी शिकायत किया कि उनका ट्रैक्टर दिलवा दीजिये। इस पर राजा भैया ने उन्हे एक बार फिर से पुलिस के पास जाने कि सलाह दिये और आश्वास्त किया की उनकी सुनवाई होगी। आश्वासन के बाद पीड़ितों को लगा कि अब उनके साथ पुलिस भी न्याय करेगी।

जनता दरबार में समस्या पत्र को पढ़ते कुण्डा विधायक राजा भइया।

डयूटी के दौरान होमगार्ड की मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। उदयपुर थाना क्षेत्र के ग्रामीण बैंक राजापुर के पास रात में डयूटी कर रहे होमगार्ड की अचानक तबीयत खराब होने से मौत हो गयी। घटना से परिजनों में कोहराम मचा है। लालगंज कोतवाली के बेलहा गांव निवासी संतलाल गुप्ता 57 लालगंज में होमगार्ड है। सोमवार की रात उसकी डयूटी उदयपुर थाना क्षेत्र के राजापुर इलाके में लगी थी। वह अपने साथी रामलखन यादव के साथ रात में डयूटी कर रहा था। इसी बीच अचानक सीने में दर्द होने से उसकी तबीयत खराब हो गयी। साथी होमगार्ड ने पुलिस को सूचना दी और उसे लेकर इलाज के लिए सांगीपुर सीएचसी पहुंचा। यहां हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने होमगार्ड को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जिला अस्पताल में इलाज के दौरान होमगार्ड की मौत हो गयी। होमगार्ड की मौत की जानकारी होने पर कोहराम मच गया। थानाध्यक्ष राधेबाबू का कहना है कि शव को पीएम के लिए भेजा गया है, घटना की जांच की जा रही है।

उमरवैश्य समाज का छात्र-छात्रा सम्मान समारोह 30 जून को, 125 मेधावियों ने कराया रजिस्ट्रेशन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला उमरवैश्य समाज सभा की मासिक बैठक चिलबिला उमरवैश्य धर्मशाला में अध्यक्ष गुलाब चंद्र उमरवैश्य की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से 30 जून को होने वाले 18वें छात्र-छात्रा सम्मान समारोह की समीक्षा की गई। आज तक 125 छात्र-छात्राओं ने आवेदन किया है। जिन सबको 30 जून को सम्मानित किया जाएगा।

समाज सभा के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि समाज सभा द्वारा आयोजित समाज के मेधावियों को जो हाई स्कूल, इंटर, बीए, एमए में प्रथम स्थान प्राप्त किए हैं उन सब को 30 जून को आयोजित उमरवैश्य धर्मशाला चिलबिला में भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है। सभी मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मान पत्र व मेडल आदि देकर सम्मानित किया जाएगा। महामंत्री शोभनाथ ने सभी छात्र-छात्राओं से अपील किया कि 30 जून को सुबह 10 बजे उमरवैश्य धर्मशाला में पहुंचे जिन्होंने अपना रजिस्ट्रेशन करा लिया है। अध्यक्षता कर रहे गुलाब चंद्र उमरवैश्य ने कहा कि सभी पदाधिकारी इस 18वें छात्र-छात्रा सम्मान समारोह में अपनी उपस्थिति देकर समाज के बच्चों का उत्साह बढ़ाए। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री शोभनाथ उमरवैश्य व आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष मदन लाल ने किया। इस अवसर पर विश्वनाथ उमरवैश्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष राम जी पट्टी, अजय कुमार, हनुमान प्रसाद, आशीष कुमार, विजय कुमार, शोभनाथ, कैलाश मैनेजर, मदनलाल, गुलाबचंद, तिर्जुगी उमरवैश्य आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

उमरवैश्य समाज की बैठक में मौजूद पदाधिकारीगण।

हरे पेड़ की डाल काट ले जाने की शिकायत पर नहीं सुन रही पुलिस, उच्चाधिकारियों से गुहार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पुस्तैनी जमीन पर लगे हरे पेड़ की डाल को काट ले जाने की घटना को लेकर पीड़ित ने वन क्षेत्राधिकारी समेत उच्चाधिकारियों से शिकायत की है। विकासखण्ड लक्ष्मणपुर अन्तर्गत लीलापुर थाना क्षेत्र के कटैया नेवादा निवासी अक्षय कुमार सिंह पुत्र लल्लन सिंह ने उच्चाधिकारियों को भेजे गये शिकायती प्रार्थना पत्र में कहा है कि वह भिलाई नगर छत्तीसगढ़ में रोजगार के सिलसिले में रहता है। पीडित का आरोप है कि उसके गांव में पुस्तैनी जमीन पर पूर्वजों द्वारा लगाया गया करीब सौ वर्ष पुराने गूलर के हरे पेड़ की डाल को गांव के कुछ दबंग काट ले गये। इसकी सूचना फोन पर मिलने के बाद पीड़ित ने गांव आकर बाइस जून को थाना समाधान दिवस पर शिकायत की। लेकिन जांच के नाम पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़ित ने वन क्षेत्राधिकारी समेत उच्चाधिकारियों से हरे पेड़ काट ले जाने को लेकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। मामले में वन दरोगा विजय प्रताप सिंह का कहना है कि शिकायत मिली है, जांच के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

किशोरी से छेडछाड़ व धमकी का केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। किशोरी से छेडछाड व धमकी की घटना को लेकर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। कोतवाली के एक गांव की पीड़ित किशोरी के पिता रामलाल यादव ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि तेईस जून की शाम उसकी नाबालिग पुत्री के साथ गांव रास्ते पर गांव का विपिन यादव पुत्र चुन्नी यादव जबरन रोककर छेडछाड करने लगा। पीड़िता के विरोध करने पर उसे जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने जांच के बाद आरोपी विपिन यादव के खिलाफ छेडछाड व धमकी का मुकदमा दर्ज किया है।

करंट की चपेट में आने से वृद्धा की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। घर में दरवाजे पर सो रही वृद्धा की विद्युत करंट की चपेट में आने से मौत हो गयी। वृद्धा की मौत से परिजनों में कोहराम मचा है। लालगंज कोतवाली के खपराही गांव की चंद्रकली 70 पत्नी स्वर्गीय रामधनी सरोज सोमवार की रात घर के बरामदे मे फर्राटा पंखा लगाकर सो रही थी। रात में सोकर उठने के दौरान फर्राटे के तार में उतरे करंट की चपेट में आ गयी। जिससे उसकी मौत हो गयी। मृतका की दो संतान पुत्र हरिकेश व पुत्री कविता हैं। दोनों विवाहित हैं। रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज सुरेन्द्र सिंह का कहना है कि शव को पीएम के लिए भेजा गया है। तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

सीएचसी की चारदीवारी तोड़कर दबंग ने लगाया निजी गेट

रसूख के आगे अस्पताल प्रशासन असहाय

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय सीएचसी की चारदीवारी को तोड़कर एक दबंग किस्म का व्यक्ति अपना निजी दरवाजा लगा लिया है।वह अस्पताल परिसर को दरवाजे के रूप में उपयोग करता है।रसूख के आगे दबंग पर कार्रवाई को लेकर अस्पताल के जिम्मेदार लाचार दिखाई दे रहे है।

बता दें कि स्थानीय सीएचसी देख-रेख के स्वभाव में लावारिश दिखने लगी है। कहीं इधर चारदीवारी टूटी हुई है तो कोई बाउंड्री वॉल को तोड़कर अस्पताल परिसर में ही अपना निकास बना लिया है। लापरवाही की चलते अस्पताल परिसर में चाहे लोग जिस तरफ से आए कोई रोक-टोक नही है। महिला वॉर्ड की तरफ की टूटी वाउंड्रीवाल से तो हमेशा अराजकतत्वों से खतरा बना रहता है। एक व्यक्ति ने तो अस्पताल परिसर की वाउंड्रीवॉल को तोड़कर अपना गेट लगा लिया है। वहीं रसूख के चलते दबंग व्यक्ति द्वारा सीएचसी परिसर में लगाए गए गेट को बंद करवाने में प्रशासन अक्षम दिखाई दे रहा है। ऐसी अव्यवस्था के चलते बाहरी लोगो का रात-बिरात आना-जाना हमेशा लगा रहता है। अराजकतत्वों के आवागमन से हमेशा खतरे का अंदेशा बना रहता है। इस संबंध में सीएचसी अधीक्षक ने बताया की कई बार दरवाजा को बंद कराने का प्रयास किया गया, लेकिन ऊंची पहुंच के चलते कार्रवाई संभव नहीं हो पाती है।

सीएचसी परिसर में खोला गया दरवाजा

सीएचसी में संचालित हो रहा है अवैध नर्सिंग होम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय सीएचसी परिसर की बाउंड्रीवाल से जुड़े एक अवैध नर्सिंग होम का संचालन हो रहा है। सूत्रों की मानें तो सीएचसी में आई प्रसव पीड़िताओं को कुछ लोग गुमराह करके अस्पताल की जगह अवैध नर्सिंग होम में दाखिल करा देते है। इसे लेकर कई बार तीमारदार व संचालक के बीच विवाद भी हो चुका है। लोग एक ही परिसर होने के कारण अवैध नर्सिंग होम को सीएचसी का हिस्सा समझ कर झांसे में आ जाते हैं।

रोजगार मेले का आयोजन 28 जून को

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय प्रतापगढ़ परिसर में 28 जून को पूर्वान्ह 10 बजे से रोजगार मेले का आयोजन किया गया है जिसमें निजी क्षेत्र की कम्पनियों क्रमशः ब्राइट फ्यूचर आर्गेनिक हर्बल्स एण्ड आयुर्वेदिक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा एरिया आफिसर, ए0आई0एम0 मल्टी स्किल्स जॉब्स प्रा0लि0 द्वारा आपरेशन असिटेन्ट पद पर एवं एलआईसी ऑफ इण्डिया द्वारा इंश्योरेन्स एडवाइजर के रिक्त पदों पर बेरोजगार अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा। इच्छुक अभ्यर्थी मेले में अपने साथ आई0डी0, मूल शैक्षिक अभिलेख एवं पासपोर्ट साइज फोटो के साथ सम्मिलित हो सकते है। रोजगार मेले में प्रतिभाग करने के लिये सर्वप्रथम अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल पर आनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। आनलाइन पंजीयन के लिये सबसे पहले रोजगार संगम पोर्टल को अपने ब्राउजर में खोले। इसके बाद साइन अप/लागिन मेन्यू में जाकर जॉबसीकर आप्शन का चयन करें। जॉब सीकर आप्शन पर क्लिक करने के उपरान्त साइन अप पेज दिखाई देगा। इस पेज पर समस्त वांछित सूचनायें भरनी है। रजिस्टर फॉर में दो ऑपशंस मिलेगें, पहला कैम्पस स्टूडेन्ट और दूसरा है जनरल जॉब सीकर का। अगर वर्तमान समय में किसी कैम्पस, इन्स्टीट्यूट या यूनिवर्सिटी के अंतिम वर्ष के छात्र है तो कैम्पस स्टूडेन्ट ऑप्शन सेलेक्ट करना है। यदि पास आउट है तो जनरल जॉब सकीर आप्शन सेलेक्ट करना है। यहां से अपनी समस्त सूचनायें जैसे पर्सनल डिटेल, परमानेन्ट एड्रेस, फिजिकल डीटेल्स, करियर प्रोफाइल, एजुकेशनल क्वालीफिकेशन, एक्सपीरियंस, लैंग्वेज और स्किल आदि भरेगें। एक्सपीरियंस भरने के लिये न्यू एक्सपीरियंस बटन पर क्लिक करना होगा। समस्त डॉक्यूमेन्ट अपलोड करने है। प्रिन्ट रजिस्ट्रेशन कार्ड बटन पर क्लिक करके आप अपना जॉब कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल पर रिज्यूम बनाने की सुविधा भी दी गई है। अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल पर आनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य है।

तालाबी जमीन पर अवैध कब्जे की शिकायत डीएम से

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के रुद्रपुर गांव में तालाब की जमीन पर कुछ लोग अवैध रूप से कब्जा कर लिए हैं। जिसकी शिकायत डीएम से की गई है। गांव के रहने वाले हीरामणि मिश्रा ने डीएम प्रतापगढ़ को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि गांव के एक तालाब पर गांव के ही कुछ लोग दबंगई के बल पर जबरन पक्का निर्माण कर लिए हैं। जिस तालाब पर निर्माण किया गया है उसे ताला पर गांव के ग्रामीणों का पानी आता जाता है तालाब के कुछ भूमि पर मिट्टी पाट कर अनैतिक रूप से कब्जा किया जा रहा है। जिससे आम लोगों को खांसी असुविधा हो रही है। पीड़ित ने डीएम प्रतापगढ़ को प्रार्थना पत्र देकर तालाब की जमीन पर हुए अवैध निर्माण को खाली कराए जाने की मांग उठाई है। डीएम प्रतापगढ़ ने एसडीएम पट्टी को मामले की जांच कर उचित कार्रवाई करने का आदेश जारी किया है। इस संबंध में एसडीएम पट्टी तनवीर अहमद से बात की गई तो उन्होंने बताया की प्रार्थना पत्र मिला है। मामले की जाकर उचित कार्रवाई की जाएगी।

दीप जलाकर प्रशिक्षण का शुभारंभ करती मुख्य अतिथि।

सोशल आडिट टीम के सदस्यों का प्रशिक्षण शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। क्षेत्रीय ग्राम विकास संस्थान अफीम की कोठी प्रतापगढ़ में सोशल आडिट टीम के दो सत्रों का पांच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्रशिक्षण का उद्घाटन आचार्य मंजू देवी द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस दौरान सोशल आडिट टीम के सदस्यों को प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस दौरान पूछे गये प्रश्नों का उत्तर भी प्रशिक्षणार्थियों को दिया गया। इस अवसर पर प्रेम कुमार वर्मा प्रसार प्रशिक्षण अधिकारी सत्र प्रभारी प्रवीण कुमार शुक्ला, सौरभ सिंह, बीसैक प्रभा पांडेय, पूनम शर्मा, अमृतलाल, बीआरपी अमरनाथ शर्मा, सेवानिवृत्त अनुदेशक सुरेश चंद्र मिश्र, जयप्रकाश चैधरी आदि उपस्थित रहे।

पुरानी रंजिश को लेकर मारपीट पिता पुत्र समेत तीन घायल

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी कस्बे के घोसियाना मोहल्ले में पुरानी रंजिश को लेकर मारपीट हो गई। मारपीट की यह घटना सोमवार की शाम 7 बजे के आस-पास की बताई जा रही है। घोसियाना मोहल्ले के रहने वाले मोहम्मद नशीम का आरोप है कि उनका आपसी बटवारा चल रहा था। इस दौरान पुरानी रंजिश को लेकर पड़ोसी तीन लोग आ गए। लाठी डंडा व बैट से मार-पीट करने लगे। जिससे उसे काफी छोटे आ गई। बीच बचाव को पहुंचे उसके भाई व उसके पिता को भी मारपीट कर घायल कर दिया। सभी घायल रात 9 बजे के आस-पास कोतवाली पहुंचकर पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

प्रेम प्रसंग के चलते पति ने विवाहिता को पीटकर भगाया

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। प्रेम प्रसंग के चलते पति ने विवाहिता को मारपीट कर घर से भगा दिया। पीड़ित विवाहिता मायके पहुंची और मायके से मामले की शिकायत लेकर थाने पहुंची पुलिस को नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। कोतवाली क्षेत्र के दाउदपुर गांव की रहने वाली साधना गौतम पत्नी पवन गौतम ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसका विवाह हिंदू रीति रिवाज से 3 वर्ष पूर्व दाउदपुर गांव के रहने वाले पवन कुमार पुत्र ननकू राम के साथ हुआ था शादी के बाद से ही पति दूसरी लड़की के प्रेम प्रसंग में पकड़कर उसे आए बिन तरह तरह से हैरान परेशान करने लगा। हद तो तब हो गई जब वह प्रार्थिनी का जेवर आदि बेचकर शराब पी गया और उसे मारपीट कर घर पर भगा दिया। पीड़ित विवाहिता ने घटना की सूचना मायके वालों को दी मायके से वह शिकायत लेकर कोतवाली पहुंची और पति पर गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस को शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

लेखपाल की बाइक अनियंत्रित होकर पलटी दो घायल

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जिला मुख्यालय से पट्टी हाजिरी देने आ रहे लेखपाल की बाइक सामने से आ रही बाइक सवार को बचाने में पलट गई। घटना में दो लेखपाल घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए ले जाया गया है। कंधई थाना क्षेत्र के मनैतापुर गांव के समीप एक बाइक पर दो लेखपाल राम अचल व शिव दत्त मंगलवार को करीब 11 पट्टी तहसील मुख्यालय पर हाजिरी देने आ रहे थे। सामने से आ रहे बाइक सवार को बचाने में दोनों अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे पलट गए। बाइक चला रहे शिवदत्त को गंभीर चोटें आ गई। जबकि राम अचल के हाथ में भी चोट लग गई। आस-पास के लोग मौके पर आए दोनों घायलों को 108 एंबुलेंस की मदद से बेलखर नाथ सीएचसी भेजा गया। शिवदत्त को गंभीर चोट होने के कारण जिला मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। सूचना मिलने पर कई लेखपाल घटनास्थल पर पहुंच गए।

श्रद्धालुओं से भरी बस में ट्रेलर ने मारी टक्कर एक महिला की मौत दो घायल

राजस्थान के श्री गंगानगर से श्रद्धालुओं को लेकर प्रयागराज गई बस लौट रही थी वापस

कोखराज कौशाम्बी प्रयागराज से मथुरा वृंदावन के लिए का रही 40 श्रद्धालुओं की बस में ट्रेलर ट्रक ने टक्कर मार दी,हादसे में महिला का सिर धड़ से अलग होकर सड़क पर गिर पड़ा,वही दो लड़कियां भी घायल हो गई,घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई।

जानकारी के मुताबिक श्रीगंगानगर राजस्थान के रहने वाले 40 श्रद्धालुओं को लेकर बोल्बो बस संख्या फख 13 ढअ 9101से प्रयागराज से मथुरा वृंदावन की ओर जा रही थी सोमवार की रात में लगभग 2 बजे कोखराज थाना क्षेत्र में नेशनल हाइवे पर स्थित पंचम होटल के पास दूसरे तरफ से आ रहे वाहन संख्या फख06ऋ9735 ट्रेलर ने बस में पीछे से टक्कर मार दी, जिस कारण बस में बैठी एक महिला अलका पत्नी स्वर्गीय अनंत कुमार उम्र करीब 40 वर्ष निवासी सरदारपुर बीभा थाना सूरतगण सदर कोतवाली जनपद गंगानगर राजस्थान की मौके पर ही मौत हो गई और दो बच्चियों संध्या 12 वर्ष व मल्लिका उम्र 8 वर्ष पुत्री गण पवन कुमार निवासी सरदारपुर बीभा थाना सूरतगण सदर कोतवाली जनपद गंगानगर राजस्थान पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

धड़ से सिर हुआ अलग :

कोखराज कौशाम्बी श्रद्धालुओं से भरी बस से सफर कर रही महिला ने खिड़की से बाहर अपना सिर निकाला था ट्रेलर ट्रक ने बस में टक्कर मार दिया जिससे महिला का सिर धड़ से अलग होकर सड़क पर गिर पड़ा।

घायल हैं। मौके पर पहुंचे पुलिस ने सभी घायलों को इलाज के लिए एंबुलेंस से जिला अस्पताल मंझनपुर भेजा जहा उनका इलाज चल रहा है,पुलिस ने मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और आरोपी वाहन चालक भैरों गुब्बर पुत्र सुगवा उम्र करीब 30 वर्ष निवासी ग्राम सवारिया थाना पंडेर जिला भीलवाड़ा राजस्थान पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

अनियंत्रित होकर गड्ढे में गिरा बाइक सवार, हुई मौत

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के धर्मा देवी इंटर कालेज के पास बीती देर शाम सड़क से जा रहा बाइक सवार युवक अनियंत्रित होकर गड्ढे में चला गया उपचार के अभाव में युवक की मौत हो गई।बीती देर रात्रि अझुवा चौकी पुलिस गस्त में थी रात्रि लगभग 1 बजे काने मई के धर्मा देवी इंटर कालेज के पास सड़क पर एक बाइक दिखी तो पुलिस ने जांच पड़ताल किया तो एक युवक गंभीर स्थिति में गड्ढे में मुंह के बल पड़ा था जिसकी मौत हो चुकी थी बाद जांच में पता चला घनश्याम उम्र तकरीबन 34 वर्ष पुत्र अमरनाथ निवासी अल्लीपुर थाना सुल्तानपुर घोष किसी कार्यक्रम में शामिल होने बिछियांवा गांव गया था परिजनों के अनुसार बीती रात 9 बजे बिछियांवा से घर अल्लीपुर लौट रहा था धर्मा देवी के पास बाइक सवार दुर्घटना ग्रस्त हो गया पुलिस ने परिजनों को खबर कर पोस्टमार्टम को भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

हटाए गए कौशांबी डीएम ,मधुसूदन हुलगी बने नए जिलाधिकारी

कौशांबी। लोकसभा चुनाव के बाद पूरे प्रदेश स्तर पर आईपीएस और आईएएस अफसर के तबादलों की सूची में कौशांबी के जिला अधिकारी राजेश कुमार राय का भी स्थानांतरण कौशांबी से हो गया है राजेश कुमार राय के स्थान पर कौशांबी के जिला अधिकारी मधुसूदन हुलगी बनाए गए हैं 2015 बैच के आईएएस अफसर मधुसूदन हुलगी मूल रूप से कर्नाटक के रहने वाले हैं

सांड को कुएं से निकला गया जिंदा बाहर

कोखराज कौशाम्बी कोखराज क्षेत्र के चाकवन चौराहे में बाजार के कुआ में दो दिन पहले एक सांड गाय कुए में गिर गयी थी मामले की जानकारी जब ग्रामीणों को लगी तो उन्होंने मामले की सूचना पुलिस को दी सूचना मिलने के बाद पुलिस ने फायर ब्रिगेड को मामले की जानकारी दी मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने बड़ी मशक्कत के बाद सांड गाय को कुए से जिन्दा बाहर निकाल लिया है मौके पर 112 डायल पुलिस भी मौजूद रही जानकारी मिलने के बाद पशु विभाग के डॉक्टर भी पहुंच गए हैं और गाय का इलाज कर रहे हैं।

बाबा बफार्नी के दर्शन के लिए अझुवा क्षेत्र से पहले जत्था रवाना

अझुवा कौशांबी जम्मू कश्मीर स्थित बाबा अमरनाथ में बर्फ से प्राकृतिक रूप से बनने वाले शिवलिंग के दर्शन के लिए देश भर के तमाम शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्र से श्रद्धालु रवाना होते हैं नगर पंचायत अझुवा क्षेत्र का बाबा बफार्नी के दर्शन हेतु पहले जत्था आज 25 जून को रवाना हुआ है कई वर्षों से यात्रा पर जा रहे अनुभवी श्रद्धालु पहली बार जाने वाले श्रद्धालुओं को यात्रा में होने वाली परेशानियों से निपटने के लिए विशेष सुझाव दे रहे हैं नगर पंचायत अझुवा के आशुतोष सिंह,दिलीप केसरवानी वेद,संजय केसरवानी ब्रेड वाले,राजेंद्र कुमार जंतर,सोनू केसरवानी गुड़ वालों का आज 25 जून को विधि विधान से पूजा पाठ कर बड़े बुजुर्गों से आशीर्वाद लेकर कार से रवाना हुए हैं आशुतोष सिंह ने बताया 29 जून से बाबा बफार्नी की यात्रा शुरू हो रही है।

आईजीआरएस पोर्टल की शिकायतों को अधिक प्रभावी ढंग से निस्तारण के सम्बन्ध में अधिकारियों कर्मचारियों को दिया गया प्रशिक्षण

कौशाम्बी अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) प्रबुद्ध सिंह की अध्यक्षता में उदयन सभागार में आईजीआरएस पोर्टल के माध्यम से आमजन-मानस की प्राप्त शिकायतों को अधिक प्रभावी ढंग से निस्तारण कराने तथा संतुष्टिपरक बनाये जाने के सम्बन्ध में विकास भवन सहित अन्य विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। ई-डीएम कीर्त कुमार द्वारा मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप शिकायतों के निस्तारण को अधिक प्रभावी और संतुष्टिपरक बनाये जाने के लिए विभिन्न बिन्दुओ पर जानकारी/प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण एवं फीडबैक प्रणाली की जानकारी दी। इसके साथ ही वर्तमान में सीएम हेल्पलाइन एवं ऑनलाइन प्राप्त हो रहीं अधिक संख्या में शिकायतों को अधिकारियों द्वारा रैण्डम आधार पर फीडबैक लिए जाने एवं संतुष्टि से सम्बन्धित आवश्यक साक्ष्य लगाये जाने, आईजीआरएस रैंकिंग के सम्बन्ध में भी प्रशिक्षण दिया गया।प्रशिक्षण में जिला विकास अधिकारी विजय कुमार एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक सुनील शुक्ला सहित विकास भवन व अन्य विभागों के अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

मुंबई से लौटा पति, कमरे में मिला पत्नी का प्रेमी

फिर प्रेमी को उतार दिया मौत के घाट,शव को लगा दिया ठिकाने आरोपी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिले में युवक की हत्या का हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है,जहां एक युवक ने अपनी पत्नी को उसके प्रेमी के साथ रंगे हाथों अपने घर पर कमरे के अंदर पकड़ लिया,आग बबूला पति ने मौके पर ही पत्नी के प्रेमी की गला दबाकर हत्या कर दी,और शव को बोरे में डालकर ठिकाने लगाने प्रयागराज जनपद के नवाबगंज ले गया और वहां शव को ठिकाने लगाकर मुंबई फरार हो गया।पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और उसकी निशानदेही पर शव को भी बरामद कर लिया। जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के बड़ा अडहरा गांव के रहने वाले महेश ने 19 जून को करारी थाने में तहरीर दी कि उनका बेटा विजय उम्र 19 साल 16 जून की शाम 8 बजे घर से शौच के लिए गया था और तब से घर नहीं लौट सका पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट कर विजय की तलाश शुरू कर दी, पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की तो पता चला कि विजय के पड़ोस में रहने वाले रंजीत कुमार की पत्नी से प्रेम संबंध हैं, जिसके तीन बच्चे भी हैं। रंजीत मुंबई में प्राइवेट नौकरी करता है,रंजीत की गैरमौजूदगी में विजय रात में उसके घर जाता है। यह बात किसी अनजान ने रंजीत को बताई, इसकी सच्चाई जानने के लिए बिना किसी को कुछ बताए रंजीत मुंबई से 16 जून को घर पहुंचा, जब उसने घर का दरवाजा खोला तो अंदर का नजारा देखकर उसके होश उड़ गए,उसकी पत्नी विजय के आगोश में थी, तभी रंजीत ने विजय की गला दबाकर हत्या कर दी और शव को बोरे में भरकर स्कूटी से प्रयागराज जनपद के नवाबगंज थाना की सड़क किनारे फेंक कर फरार हो गया,शक के आधार पर पुलिस ने रंजीत की पत्नी से सख्ती से पूछताछ तो सारा मामला खुलकर सामने आ गया,पुलिस ने किसी तरह आरोपी को मुंबई से वापस बुलाया और उसे गिरफ्तार कर लिया।सीओ मंझनपुर सतेंद्र तिवारी ने बताया कि मृतक के पिता महेश ने 19 जून को थाना करारी में अपने बेटे विजय कुमार की गुमशुदगी की शिकायत दी थी, उस शिकायत पर तत्काल गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की गई,और शव बरामद कर मामले का खुलासा कर दिया गया।पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर जांच शुरू कर दी है।

गोवा में चल रही अंतर्राष्ट्रीय टाइकांडो प्रतियोगता में चैम्पियन बना कौशाम्बी का लाल अंकुल यादव

अंकुल यादव के गांव पहुचने पर माला पहनाकर जोरदार स्वागत ढोल नगाड़े बजाकर पूरे गांव में मिठाई बांटी

महगांव कौशाम्बी। गोवा में चली दो दिवसीय 21 व 23 जून को अंतर्राष्ट्रीय अंडर 19 टाइकांडो प्रतियोगिता में कौशाम्बी के लाल अंकुल यादव ने गोल्ड मेडल जीतकर अपने देश के साथ साथ जनपद व अपने गांव का नाम रोशन कर दिया। ग्राम पंचायत महगांव के मजरा मलहरा गांव के रहने वाले अंकुल यादव पुत्र बसन्त लाल यादव करीब सात वर्षो से लगातार टाइकंडो की तैयारी कर रहे हैं और जिला स्तरीय राज्य स्तरीय लगभग 21 से अधिक टाइकंडो प्रतियोगिताओं में भाग ले चुके हैं पहली बार अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया प्रथम स्थान प्राप्त किया और गोल्ड मेडल जीतकर देश का नाम रोशन किया। अंकुल यादव ने इंडिया टाइकांडो क्लब धूमनगंज प्रयागराज से टाइकांडो की शिक्षा कोच दीपक यादव से प्राप्त किया और कोच दीपक यादव के मार्गदर्शन में इस प्रतियोगिता में शामिल हुए। बता दें कि अंकुल ने अपनी बीएससी की पढ़ाई के दौरान और पढ़ाई पूरी करने के बाद अपना पूरा फोकस टाइकांडो की शिक्षा ग्रहण करने में लगाया। अंकुल के पिता एक किसान है मेहनत मजदूरी कर के अपने बेटे को इस क्षेत्र में नाम रोशन करने को भेजा है सफलता का श्रेय अंकुल ने अपने माता पिता और कोच दीपक यादव दिया है। कड़ी मेहनत और लगन के बल बूते इस सफलता को प्राप्त किया। अंकुल यादव ने बताया कि इस अंतर्राष्ट्रीय टाइकंडो प्रतियोगिया में चार देश शामिल हुए भारत नेपाल बांग्लदेश भूटान जिनके बीच कर राउंड मैच हुए फाइनल मुकाबला भारत के अंकुल यादव और नेपाल के खिलाड़ी के बीच हुआ जिसमे अंकुल ने नेपाल के खिलाड़ी को 12 प्वाइंट से मात देकर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। गोल्ड मेडल जीतकर जब अंकुल यादव अपने घर आए तो पूरे घर परिवार और गांव में खुशी का माहौल देखने को मिला ढोल नगाड़े बजाकर पूरे गांव में मिठाई बांटी गई। अंकुल यादव को माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया है।

जेवर नगदी लेकर युवक के साथ भागी बालिका

महगाव कौशांबी संदीपन घाट थाना क्षेत्र के सिकंदरपुर बजहा गांव की एक बालिका घर से नगदी और जेवर लेकर गांव के निखिल पुत्र नरेश के साथ 24 जून की दोपहर फरार हो गई है बालिका के गायब होने के बाद परिवार में हड़कंप मच गया परिजनों ने उसकी काफी खोज बीन की लेकिन कहीं सुराग न लगने के बाद परिवार के लोग परेशान हो गए परिवार के लोगों ने बताया कि बालिका अभी नाबालिग है सोमवार की देर शाम परिवार को जानकारी मिली कि गांव के निखिल के साथ बालिका फरार हुई है बालिका के परिवार के लोग जब निखिल के परिवार के पास पहुंचे तो निखिल के परिवार के लोगों ने बालिका के परिवार के लोगों को गाली गलौज और धमकी देना शुरू कर दिया हैं बालिका के परिवार के लोगों ने मामले की सूचना 25 जून को संदीपन घाट थाना पुलिस को दी है।

रेलवे ट्रैक से 500 मीटर दूर पेड़ पर लटकता मिला खागा के युवक का शव

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली के ग्राम सभा कनवार के मजरा मेड़ी पुर के सामने दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से 500 मीटर दूर छिउल के पेड़ की डाल पर अंगौछा के सहारे लटकता हुआ एक युवक का शव मिला है ट्यूबवेल के पास कार्य कर रही महिलाओं ने पेड़ से लटकते शव को देखा तो ग्रामीणों को सूचना दी सूचना से ग्रामीणों का मजमा लग गया ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने लटकते शव को पेड़ से उतरवा कर शिनाख्त में जुट गई युवक के पास एंड्रायड मोबाइल मिला है जिसमे कई छूटी काल दिख रही हैं मोबाइल में पासवर्ड लगा है जिसे चौकी पुलिस ने कब्जे में ले लिया है युवक के बाएं हाथ में जितेंद्र दिवाकर गुदा है युवक के पास से बॉम्बे से प्रयागराज का रेल टिकट मिला है युवक नीली जींस और मटमैली कलर की शर्ट पहने है थोड़ी देर में मोबाइल में उसके पिता का फोन आया युवक की शिनाख्त हो गई युवक खागा थानाक्षेत्र का कूरापुर गांव का जितेंद्र दिवाकर पुत्र देवशरण था।युवक बॉम्बे से कमाकर घर आ रहा था युवक के बैग से मिठाई का डिब्बा और कुछ खाद्य पदार्थ मिले है पुलिस के अनुसार युवक ने खुदकुशी की है पुलिस की सूचना से परिजन चौकी पहुंच रहे हैं।अझुवा चौकी पुलिस शव को कब्जे में लेकर कागजी कार्रवाई में जुटी हुई है।

लोकसभा चुनाव के दौरान सरकारी जमीन पर विशेष वर्ग के लोगो ने किया अवैध कब्जा

प्रशासन ने घरों पर बुलडोजर चलाकर किया जमींदोज

कौशाम्बी। लोकसभा चुनाव के दौरान जब पूरा प्रशासन चुनावी कार्य में व्यस्त था, उसी समय एक वर्ग विशेष के लोगों ने लगभग दो बीघे सरकारी जमीन पर 7- 8 घर बनाकर कब्जा कर लिया था। जिसकी शिकायत गांव के कई लोगों ने एसडीएम मंझनपुर से की गई थी। मामले में मंगलवार को कार्रवाई करते हुए इस अतिक्रमण को हटा दिया गया है प्रशासन की इस कार्रवाई से इलाके के अवैध कब्जा धारी में हड़कंप मच गया है। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के आम्बावां पश्चिम गांव में गाटा संख्या 301 पर अवैध रूप से आधा दर्जन से अधिक लोगों ने चुनाव के दौरान जब प्रशासन चुनावी कार्यक्रम में व्यस्त था कि अचानक एक बीघे से अधिक जमीन पर एक साजिश के तहत अवैध रूप से कई मकान के ढांचे खड़े कर दिए। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत एसडीएम आकाश सिंह से किया, मामले की गंभीरता को देखते हुए इसकी जांच कराई गई। शिकायत की सच्चाई को देखते हुए मंगलवार को नायब तहसीलदार की अगुवाई में बनी टीम ने पुलिस प्रशासन की मौजूदगी में इन अवैध ढांचों को बुलडोजर चलाकर जमींदोज कर दिया। बुलडोजर कार्रवाई से इलाके के अवैध का कब्जा धारकों को में हड़कंप मच गया है। वहीं दूसरी ओर इलाके के समाभ्रांत लोगों ने इस कार्रवाई की सराहना की है।

141 वाहनों का पुलिस ने किया ई चालान

कौशांबी यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक बृजेश श्रीवास्तव के निर्देशन में जिले के संपूर्ण थाना पुलिस ने अपने-अपने क्षेत्र में मंगलवार को वाहन चेकिंग अभियान चलाया इस दौरान वाहन चालकों को यातायात नियमों के पाठ पढ़ाए गए और उन्हें निर्धारित गति सीमा में वाहनों को चलाने के लिए निर्देशित किया गया वाहन चेकिंग के दौरान गलत पाए जाने पर पूरे जिले में थाना पुलिस द्वारा 141 वाहनों का ई-चालान किया गया और गलत अभिलेख पाए जाने पर एक वाहन को सीज किया गया पुलिस की बड़ी कार्रवाई से पूरे जिले में वाहन चालकों में हड़कंप मचा रहा थाना मंझनपुर पुलिस टीम द्वारा संदिग्ध व्यक्तियों/वाहनों को चेक किया गया एवं यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों का ई-चालान किया गया तथा वाहन चालकों को यातायात नियमों की जानकारी देते हुए उनके पालन हेतु जागरूक किया गया।

सकिपा कार्यकताओं ने किया लस्सी वितरण का आयोजन

जनहित और जनसेवा ही हमारी पहचान : विजय शुक्ला

कौशाम्बी। भीषण गर्मी से हलाकान लोगों को राहत दिलाने के लिए मंगलवार 25 जून को मंझनपुर आर टी ओ दफ्तर के पास समर्थ किसान पार्टी के दर्जनों कार्यकताओं ने लस्सी वितरण का आयोजन किया और लस्सी स्टाल लगाकर लोगों को लस्सी पिलाई। कार्यक्रम का शुभारंभ पार्टी नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी के हाथों सर्वप्रथम कई लोगों को लस्सी वितरण कर कराया गया। इस अवसर पर अजय सोनी ने कार्यकताओं से लोगों को प्रेमपूर्वक लस्सी पिलाने का आह्वान किया। लोगों खासकर राहगीरों ने इस मौके पर जमकर लस्सी का लुत्फ उठाया और छककर लस्सी पी। समर्थ किसान पार्टी के दर्जनों कार्यकताओं ने भीषण गर्मी से लोगों को राहत दिलाने के लिए मंगलवार 25 जून को मंझनपुर आरटीओ कार्यालय के सामने मुफ्त लस्सी वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर कार्यकताओं ने मौके पर पहुंचे लोगों सहित गाड़ियों को रोक रोककर राहगीरों को ठंडी लस्सी पिलाई। लोगों ने भी जमकर लस्सी का लुत्फ उठाया और छक कर लस्सी पी। शुद्ध दही और बर्फ से निर्मित लस्सी पीने के लिए स्टाल पर लोगों की भीड़ जमा रही। आरटीओ कार्यालय में अपने कार्य के लिए पहुंचे लोगों को जैसे ही मुफ्त लस्सी वितरण की जानकारी हुई, लोगों ने मौके पर पहुंचकर लस्सी का आनंद लिया। इसी तरह सिराथू मंझनपुर मार्ग से गुजर रहे राहगीरो और यात्री वाहनों में बैठे यात्रियों समेत आसपास की दुकानों में मौजूद रहे लोगों ने भी इस मौके पर लस्सी का आनंद लिया। इस अवसर पर समर्थ किसान पार्टी से सिराथू विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी रहे एवं कार्यक्रम आयोजक विजय शुक्ला ने कहा कि जनहित एवं जनसेवा हमारी पहचान है। भीषण गर्मी में लोगों को लस्सी वितरण करने से पुण्य लाभ होता है। आगे भी हम लोग पार्टी के तत्वावधान में ऐसे आयोजन करते रहेंगे। इस अवसर पर महेंद्र शुक्ला, राजन शुक्ला, प्रभाकर शुक्ला, विजय तिवारी, किशोरी पाल, नवनीत शुक्ला, संदीप, मुन्ना, राकेश, दीपक आदि मौजूद रहे।

संपादक की कलम से

केजरीवाल को जमानत मामले में प्रवर्तन निदेशालय की सफलता क्षणिक

केजरीवाल लगातार कहते रहे हैं कि ईडी उनके खिलाफ कोई विश्वसनीय सुबूत पेश करने में विफल रही। न्यायालय की टिप्पणियों के बाद इस बिंदु पर उनका जोर विश्वसनीयता प्राप्त करता है। यदि ईडी के पास वास्तव में पुख्ता सुबूत नहीं हैं, तो यह एजेंसी के मामले पर सवाल उठाता है। हालांकि ईडी ने केजरीवाल की जमानत पर स्थगन प्राप्त करने में कानूनी पैंतरेबाजी की है, लेकिन मामले के मूल पहलू अभी भी अनसुलझे हैं।

प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटा कर आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल के जमानत पर बाहर आने के जश्न में बाधा डालने में कामयाबी हासिल की है, जबकि न्यायालय के आदेश पर वह अपना हाथ भी नहीं डाल सकता था। फिर उच्च न्यायालय ने कुछ प्रक्रियागत मुद्दों के आधार पर इस पर अस्थायी रोक लगा दी है। लेकिन यह उसकी कोई बड़ी जीत नहीं हो सकती है, क्योंकि यह रोक केवल तब तक लागू रहेगी, जब तक कि ईडी की चुनौती पर सुनवाई नहीं हो जाती और न्यायालय द्वारा अगले 2-3 दिनों में इसका निपटारा नहीं कर दिया जाता। जिस तरह से ईडी ने प्राकृतिक न्याय को अवरुद्ध करने की कोशिश की है, उससे जाहिर तौर पर उसके राजनीतिक आका खुश हैं, जो केजरीवाल और उनकी पार्टी को हमेशा के लिए खत्म होते देखना चाहते हैं क्योंकि उन्हें पार्टी के बढ़ते प्रभाव से वास्तविक खतरा दिखाई देता है। लेकिन जिस तरह से एजेंसी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री की रिहाई में देरी करने के लिए काम किया है, उसकी व्यापक निंदा हुई है। बड़ा सवाल यह है कि प्रक्रियात्मक मुद्दों का सहारा लेकर एजेंसी अपनी विफलताओं को किस हद तक छिपा सकती है और जब अदालत मूल मुद्दों और ईडी की आपत्तियों के गुण-दोष पर विचार करेगी, खासकर उस संदर्भ में जब मूल अदालत ने मामले के बारे में गंभीर संदेह व्यक्त करते हुए जमानत दी थी। ईडी की केजरीवाल को निचली अदालत द्वारा दी गई जमानत पर स्थगन प्राप्त करने में सफलता मुख्य रूप से तकनीकी आधार पर थी न कि केजरीवाल के खिलाफ प्रस्तुत साक्ष्य की गुणवत्ता पर। एजेंसी ने तर्क दिया कि उसे जमानत की सुनवाई के दौरान केजरीवाल के वकील द्वारा प्रस्तुत तर्कों का खंडन करने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया गया था। उच्च न्यायालय द्वारा इस तर्क को स्वीकार करना ईडी के लिए एक ठोस जीत के बजाय एक प्रक्रियात्मक जीत का संकेत देता है।

इससे केजरीवाल के खिलाफ ईडी के मामले की मजबूती पर सवाल उठते हैं। प्रारंभिक जमानत कार्रवाई के दौरान सुबूतों के माध्यम से केजरीवाल की संलिप्तता को पुख्ता तौर पर स्थापित करने में ईडी की असमर्थता उनकी जांच या एकत्र किये गये सुबूतों में कमजोरियों का संकेत दे सकती है। वास्तव में, राउज एवेन्यू कोर्ट के जज द्वारा दिये गये 25-पृष्ठ के आदेश में ईडी के तौर-तरीके की गंभीर आलोचना की गई है, जिसमें अपर्याप्त सुबूत प्रस्तुत करना और कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच में संभावित पक्षपात दिखाना शामिल है। जबकि मनी लॉन्ड्रिंग की पुष्टि हो गई है, एजेंसी केजरीवाल को लेन-देन से जोड़ने में विफल रही है।

कोर्ट ने बिना किसी पुष्ट सुबूत के सह-आरोपी और अनुमोदकों के बयानों पर भरोसा करने के लिए ईडी की भी आलोचना की। अदालत की टिप्पणी वर्तमान राजनीति की एक दर्दनाक सच्चाई की ओर इशारा करती है, जब उसके आदेश में कहा गया है-'अदालत को इस तर्क पर विचार करने के लिए रुकना होगा, जो कि एक स्वीकार्य दलील नहीं है कि जांच एक कला है, क्योंकि अगर ऐसा है, तो किसी भी व्यक्ति को फंसाया जा सकता है और रिकॉर्ड से दोषमुक्ति सामग्री को कलात्मक रूप से हटाने के बाद उसके खिलाफ सामग्री को कलात्मक रूप से हासिल करके सलाखों के पीछे रखा जा सकता है।' जांच प्रक्रिया में प्राकृतिक न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों पर जोर देते हुए, न्यायाधीश ने कहा कि 'ईडी ने पीएमएलए की धारा 45 के तहत कठोर जमानत शर्तों पर बहुत अधिक भरोसा किया, जो प्रक्रियात्मक तकनीकी की मदद से कानूनी निष्पक्षता और निर्दोषता के अनुमान के सिद्धांतों को प्रभावित करता है।' अदालत ने आगे कहा कि केजरीवाल को अदालत ने तलब नहीं किया था, लेकिन ईडी के चल रहे जांच दावे के आधार पर वह अभी भी न्यायिक हिरासत में हैं। प्रक्रियाओं पर यह अनुचित दबाव ईडी के मामले को और कमजोर करता है। राहत के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाते समय भी एजंसी के वकील न्यायालय की टिप्पणियों में सामने आये मूल मुद्दों को नहीं उठा रहे थे, बल्कि सुनवाई की प्रक्रियाओं के बारे में बात कर रहे थे। एजेंसी के वकील, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) एसवी राजू ने उच्च न्यायालय से शिकायत की कि उन्हें अपना मामला रखने का 'पूरा अवसर' नहीं दिया गया और यहां तक कि उन्होंने न्यायाधीश के आदेश को 'विकृत' करार दिया। केजरीवाल लगातार कहते रहे हैं कि ईडी उनके खिलाफ कोई विश्वसनीय सुबूत पेश करने में विफल रही। न्यायालय की टिप्पणियों के बाद इस बिंदु पर उनका जोर विश्वसनीयता प्राप्त करता है। यदि ईडी के पास वास्तव में पुख्ता सुबूत नहीं हैं, तो यह एजेंसी के मामले पर सवाल उठाता है। हालांकि ईडी ने केजरीवाल की जमानत पर स्थगन प्राप्त करने में कानूनी पैंतरेबाजी की है, लेकिन मामले के मूल पहलू अभी भी अनसुलझे हैं।

18वीं लोकसभा : टकराव से शुरूआत

- राजेंद्र शर्मा

नीट-यूजी की परीक्षा को लेकर उठे बवाल के उदाहरण से इसे समझा जा सकता है। देश भर में मेडिकल कालेजों में दाखिले की इस परीक्षा में इस बार इतनी ज्यादा और इतने खुले तौर पर गड़बड़ियां हुई हैं कि, मेन स्ट्रीम मीडिया पर मोदी राज के सारे नियंत्रण के बावजूद, इन धांधलियों के खिलाफ स्वत:स्फूर्त आंदोलन को तेजी से बढ़ने से रोका नहीं जा सका है।

अठारहवीं लोकसभा के पहले सत्र की शुरूआत से ऐन पहले, अपने परंपरागत वक्तव्य से प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर साफ कर दिया कि उनकी सरकार से, जनादेश का आदर करते हुए, पहली पारियों के मुकाबले, तौर-तरीकों में किसी खास बदलाव की आशा नहीं की जानी चाहिए। बेशक, प्रधानमंत्री ने संसद ही नहीं, आमतौर पर शासन के लिए भी बहुमत से बढ़कर, आम सहमति के जरूरी होने पर विश्वास करने का दावा किया। लेकिन, इसके पीछे इस बार के जनादेश से उत्पन्न किसी विनम्रता की जगह, सिर्फ बयानबाजी थी और यह प्रधानमंत्री के इसके दावे से साफ नजर आता था कि उनकी सरकार तो, दस साल से आम सहमति बनाने और सब को साथ लेकर चलने के ही रास्ते पर चल रही थी! बची-खुची कसर, प्रधानमंत्री द्वारा इस मौके पर भी छोड़े गए विपक्ष के खिलाफ इस प्रकार के तीरों ने पूरी कर दी कि लोग संसद से बहस की अपेक्षा करते हैं, नाटक की नहीं, हंगामे आदि की नहीं! प्रधानमंत्री मोदी को इतने से भी संतोष नहीं हुआ तो वह, एक दिन बाद इमर्जेंसी लगाए जाने का पचासवां साल शुरू होने के बहाने से, विस्तार से इमर्जेंसी को धिक्कारने में चले गए, जिसका मकसद सबसे बढ़कर यह साबित करना था कि उनके राज के दस साल में संविधान पर आया संकट तो,कोई संकट ही नहीं था। हैरानी की बात नहीं है कि प्रधानमंत्री ने अपने इस वक्तव्य से इसी का इशारा दिया है कि संसद के पिछले कई सत्रों की तरह, अठारहवीं लोकसभा का पहला सत्र भी तीखे टकराव का ही सत्र होने जा रहा है।मोदी और उनकी भाजपा, जिस तरह से इस चुनाव के जनादेश को तोड़ने-मरोड़ने और उसके कई महत्वपूर्ण तत्वों को दबाने की ही कोशिश कर रहे हैं, उसे देखते हुए एक बार फिर यह याद दिलाना अनुपयुक्त नहीं होगा कि अगर, अपने एनडीए गठबंधन के 293 के आंकड़े के बल पर, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनना, 2024 के जनादेश का एक महत्वपूर्ण पहलू है, तो इसी जनादेश का इतना ही महत्वपूर्ण पहलू कुल मिलाकर देश की जनता द्वारा मोदी की भाजपा का हरेक पहलू से ठुकराया जाना है। 2019 के चुनाव के मुकाबले खुद भाजपा की सीटें 303 से घटकर 240 पर आ जाना और पिछले चुनाव से ज्यादा सीटें लड़ने के बावजूद, उसका अपना मत फीसद करीब 1 फीसद घट जाना और इसी प्रकार, मोदी के नेतृत्व में चल रहे एनडीए की सीटें, साढ़े तीन सौ से ऊपर से घटकर 293 रह जाना और उसके मत फीसद में भाजपा से भी ज्यादा गिरावट होना, उसी जनादेश के महत्वपूर्ण संकेत हैं। जनादेश के दोनों पहलुओं का जोड़कर देखें तो, संक्षेप में इस बार का चुनावी जनादेश देश में केंद्रीय सत्ता, मोदी और उनकी भाजपा के हाथों से छीनकर, एक साफ तौर पर उससे कहीं व्यापक गठबंधन को सौंपने का जनादेश है।

वायु प्रदूषण से होती लाखों मौतों के लिये कौन जिम्मेदार?

-ललित गर्ग-

कहते हैं जान है तो जहान है, लेकिन भारत में बढ़ते प्रदूषण के कारण जान और जहान दोनों ही खतरे में हैं। देश की हवा में घुलते प्रदूषण का ह्यजहरह्ल अनेक बार खतरनाक स्थिति में पहुंच जाना चिन्ता का बड़ा कारण हैं। प्रदूषण की अनेक बंदिशों एवं हिदायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण की बात खोखली साबित हो रही है। यह कैसा समाज है जहां व्यक्ति के लिए पर्यावरण, अपना स्वास्थ्य या दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई अर्थ नहीं है। जीवन-शैली ऐसी बन गयी है कि आदमी जीने के लिये सब कुछ करने लगा पर खुद जीने का अर्थ ही भूल गया, इस गंभीर होती स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान ह्यहेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूटह्ल की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है, इस रिपोर्ट के आंकड़े परेशान एवं शर्मसार करने के साथ चिन्ता में डालने वाले हैं, जिसमें वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। ज्यादा दुख की बात यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं, जिन्होंने अभी दुनिया ठीक से देखी ही नहीं थी। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित, चिन्तीत व परेशान करने वाले हैं। वहीं सरकार के नीति-नियंताओं के लिये यह शर्म का विषय होना चाहिए, लेकिन उन्हें शर्म आती ही कहा है? तनिक भी शर्म आती तो सरकारें एवं उनके कर्ता-धर्ता इस दिशा में गंभीर प्रयास करते। सरकार की नाकामियां ही हैं कि जिन्दगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी होकर उसे कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है।

जानलेवा वायु प्रदूषण न केवल भारत के लिये बल्कि दुनिया के लिये एक गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की कुल संख्या का प्रश्न है तो यह करीब 81 लाख बतायी जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत व चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की कुल संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसदी है। जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में शासन-प्रशासन की कोताही एवं लापरवाही को ही दशार्ता है। इसमें आम आदमी की लापरवाही भी कम नहीं है। आम आदमी को पता ही नहीं होता है कि किन प्रमुख कारणों से वह प्रदूषण फैला रहा है और किस तरह वे इस जानलेवा प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहयोगी हो सकते हैं। प्रश्न है कि आम आदमी एवं उसकी जीवनशैली वायु प्रदूषण को इतना बेपरवाह होकर क्यों फैलाती है? क्यों आदमी मृत्यु से नहीं डर रहा है? क्यों भयभीत नहीं है? देश की जनता दुख, दर्द और संवेदनहीनता के जटिल दौर से रूबरू है, प्रदूषण जैसी समस्याएं नये-नये मुखौटे ओढ़कर डराती है, भयभीत करती है। विडम्बना तो यह है कि विभिन्न राज्यों की सरकारें इस विकट होती समस्या का हल निकालने की बजाय राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप करती है, जानबूझकर प्रदूषण फैलाती है ताकि एक-दूसरे की छीछालेदर कर सके। प्रदूषण के नाम पर भी कोरी राजनीति का होना दुर्भाग्यपूर्ण है।

दिल्ली सहित उत्तर भारत के ज्यादातर इलाकों में प्रदूषण का बेहद खतरनाक स्थिति में बना रहना चिन्ता में डालता है। हालत ये बनते हैं कि कभी-कभी सांस लेना मुश्किल हो जाता है और लोगों को घरों में ही रहने को मजबूर होना पड़ता है। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरुग्राम में प्रदूषण का बड़ा कारण पड़ोसी राज्यों से आने वाला पराली का धुआं होता है। पराली के बाद पटाखों का धुआं भी बड़ी समस्या है, इसके अलावा सड़कों पर लगातार बढ़ते निजी वाहन, गुणवत्ता के ईंधन का उपयोग न होना, निर्माण कार्य खुले में होना, उद्योगों की घातक गैसों व धुएं का नियमन न होने एवं बढ़ता धूम्रपान जैसे अनेक कारण वायु प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर आवासीय कॉलोनियों व व्यावसायिक संस्थानों का विज्ञानसम्मत ढंग से निर्माण न हो पाना भी प्रदूषण बढ़ाने की एक वजह है। यह कैसी शासन-व्यवस्था है? यह कैसा अदालतों की अवमानना का मामला है? यह सभ्यता की निचली सीढ़ी है, जहां तनाव-ठहराव की स्थितियों के बीच हर व्यक्ति, शासन-प्रशासन प्रदूषण नियंत्रण के अपने दायित्वों से दूर होता जा रहा है।

यूनीसेफ की रिपोर्ट में वायु प्रदूषण से 1 लाख 69 हजार बच्चे जिनकी औसत आयु पांच साल से कम बतायी गई है, मौत के शिकार होते हैं। जानलेवा प्रदूषण का प्रभाव गर्भवती महिलाओं पर होने से बच्चे समय से पहले जन्म ले लेते हैं, इनका समुचित शारीरिक विकास सही ढ़ंग से नहीं हो पाता। इससे बच्चों का कम वजन का पैदा होना, अस्थमा तथा फेफड़ों की बीमारियां से पीड़ित होना हैं। हमारे लिये चिंता की बात यह है कि बेहद गरीब मुल्कों नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इथोपिया से ज्यादा बच्चे हमारे देश में वायु प्रदूषण से मर रहे हैं। विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के संकट ने वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या को बढ़ाया ही है। एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत के लिये यह संकट बहुत बड़ा है। दिल्ली सहित देश के कई महानगरों में प्रदूषण जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गयी है। हर कुछ समय बाद अलग-अलग वजहों से हवा की गुणवत्ता का स्तर ह्यबेहद खराबह्ल की श्रेणी में दर्ज किया जाता है और सरकार की ओर से इस स्थिति में सुधार के लिए कई तरह के उपाय करने की घोषणा की जाती है। हो सकता है कि ऐसा होता भी हो, लेकिन सच यह है कि फिर कुछ समय बाद प्रदूषण का स्तर गहराने के साथ यह सवाल खड़ा होता है कि आखिर इसकी असली जड़ क्या है और क्या सरकार की कोशिशें सही दिशा में हो पा रही है? इस विकट समस्या से मुक्ति के लिये ठोस कदम उठाने होंगे। सिर्फ दिल्ली ही नहीं, देश के कई शहर वायु प्रदूषण की गंभीर मार झेलते हैं। इसका पता तब ज्यादा चलता है जब वैश्विक पर्यावरण संस्थान अपने वायु प्रदूषण सूचकांक में शहरों की स्थिति को बताते हैं। पिछले कई सालों से दुनिया के पहले बीस प्रदूषित शहरों में भारत के कई शहर दर्ज होते रहे हैं। जाहिर है, हम वायु प्रदूषण के दिनोंदिन गहराते संकट से निपट पाने में तो कामयाब हो नहीं पा रहे, बल्कि जानते-बूझते ऐसे काम करने में जरा नहीं हिचकिचा रहे जो हवा को जहरीला बना रहे हैं।

चिंता की बात यह है कि दक्षिण एशिया में मृत्यु दर का सबसे बड़ा कारण वायु प्रदूषण ही है। उसके बाद उच्च रक्तचाप, कुपोषण तथा तंबाकू सेवन से होने वाली मौतों का नंबर आता है। दरअसल, गरीबी और आर्थिक असमानता के चलते बड़ी आबादी येन-केन-प्रकारेण जीविका उपार्जन में लगी रहती है, उसकी प्राथमिकता प्रदूषण से बचाव के बजाय रोटी ही है। वहीं ढुलमुल कानूनों, तंत्र की काहिली तथा जागरूकता के अभाव में वायु प्रदूषण रोकने की गंभीर पहल नहीं हो पाती। मुश्किल यह है कि वायुमंडल के घनीभूत होने की वजह से जमीन से उठने वाली धूल, पराली की धुंध और वाहनों से निकलने वाले धुएं के छंटने की गुंजाइश नहीं बन पाती है। नतीजन, वायु में सूक्ष्म जहरीले तत्व घुलने लगते हैं और प्रदूषण के गहराने की दृष्टि से इसे खतरनाक माना जाता है। हमारा राष्ट्र एवं दिल्ली सहित अन्य राज्यों की सरकारें नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक एवं व्यक्तिगत सभी क्षेत्रों में मनोबल के दिवालिएपन के कगार पर खड़ी है। और हमारा नेतृत्व गौरवशाली परम्परा, विकास और हर प्रदूषण खतरों से मुकाबला करने के लिए तैयार है, का नारा देकर अपनी नेकनीयत का बखान करते रहते हैं। पर उनकी नेकनीयती की वास्तविकता किसी से भी छिपी नहीं है, देश में वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों के हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट के आंकड़े इस वास्तविकता को उजागर करते हुए प्रदूषण की समस्या का कोई दीर्घकालिक और ठोस हल निकालने के लिये चेता रहे हैं।

प्रेषकः
(ललित गर्ग)
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई॰ पी॰ एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92
फोनः 22727486,

मोदी का रवैया न बदलने के संकेत

18वीं लोकसभा के विशेष सत्र की शुरूआत होने के पहले मीडिया के समक्ष उद्बोधन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो कुछ कहा, उससे साफ है कि वे अपने पूर्ववर्ती रवैये को बरकरार रखेंगे। विपक्ष को कोसने तथा 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने जैसे सब्जबाग दिखाना वे बन्द नहीं करेंगे। इसके साथ यह भी साफ हो गया है कि विपक्ष को एक बड़ी लड़ाई के लिये तैयार रहना है। आशा इस बात से बंधती है कि इस बार सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी व उसके गठबन्धन नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) के मुकाबले संयुक्त प्रतिपक्ष इंडिया काफी मजबूत होकर लोकसभा में पहुंचा है। सोमवार को नवनिर्वाचित सदस्यों को शपथ दिलाने की कार्रवाई शुरू हुई जो मंगलवार तक जारी रहेगी। बुधवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दोनों सदनों (राज्यसभा के साथ) के सदस्यों को सम्बोधित करेंगी। बाद में उनके अभिभाषण पर चर्चा होगी।

मोदी ने जो बातें राष्ट्र के सामने रखीं उनसे सर्वप्रथम तो उनका पराजय भाव ही नजर आया क्योंकि उनका 370 व 400 पार का नारा विफल रहा। अपने चुनावी प्रचार के दौरान मोदी व भाजपा के सारे स्टार प्रचारक अकेली भाजपा के बूते 370 तथा एनडीए की सम्मिलित शक्ति 400 सदस्यों से अधिक होने की बात कर रहे थे। ऐसा तो नहीं हुआ, भाजपा 240 पर सिमट गई और उसे तेलुगु देशम पार्टी व जनता दल यूनाइटेड के सहारे सरकार बनानी पड़ी है। इस निराशा के चलते मोदी ने अपने भाषण की शुरूआत 25 जून, 1974 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल से की। भारतीय इतिहास की कटु व विषादपूर्ण घटनाओं को अपने राजनीतिक फायदे के लिये उछालने वाले मोदी इस कला के इसीलिये निष्णात माने जाते हैं कि वे उन्हें तोड़-मरोड़कर और सन्दर्भों से काटकर जनता के समक्ष परोसते हैं। इस सत्र की शुरूआत उन्हें सकारात्मक नोट से करनी चाहिये थी, लेकिन अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप उन्होंने वही राह पकड़ी जिस पर वे पिछले दस वर्षों से चलते आये हैं।

मोदी की वाराणसी से तीसरी बार जीत में पहले दो के मुकाबले अंतर काफी घटा है। यहां तक कि मतदान के प्रथम दो-तीन चक्रों में वे पिछड़ भी चुके थे। अपनी इस नैतिक पराजय को भी किसी महान विश्वविजय की तरह प्रस्तुत करते मोदी ने विपक्ष को जो पाठ पढ़ाने की कोशिश की वह अपने आप में हास्यास्पद है। अपने पिछले दो कार्यकालों में जिन मोदी ने बेहद निरंकुश तरीके से सरकार चलाई, उनका यह दावा था कि 'अब कभी भी कोई सरकार तानाशाही लागू करने की नहीं सोचेगा।' उन्होंने यह भी कहा कि 'सांसदों से देश को बहुत अपेक्षाएं हैं अतः उन्हें जनहित व लोकसेवा के लिये इस अवसर का उपयोग करना चाहिये।' एक जिम्मेदार विपक्ष की जरूरत बतलाते हुए मोदी ने कहा कि 'लोग नारे नहीं सार्थकता चाहते हैं, व्यवधान नहीं बल्कि चर्चा और मेहनत चाहते हैं।' उन्होंने विपक्ष के सवाल पूछे जाने व नारेबाजी को 'ड्रामे' की संज्ञा दी, जो बतलाता है कि मोदी ऐसी संसद चाहते हैं जो उनसे प्रश्न न करे। मोदी उसी भाजपा से आते हैं जिसने लम्बे समय तक विपक्ष की भूमिका निभाई है। उनका यह बयान बतलाता है कि मोदी को लोकतंत्र में प्रतिरोध का न तो महत्व ज्ञात है और न ही वे प्रतिपक्ष का सम्मान करना जानते हैं।

हमेशा की तरह मोदी की कथनी और करनी का अंतर साफ दिखा कि स्वयं मोदी पिछली दो सरकारों में चचाओं से न केवल परहेज करते रहे हैं बल्कि सरकार से पूछे जाने वाले सवालों को अवरूद्ध करते रहे हैं। किसी भी विवादास्पद विषय पर उन्होंने न तो सिलसिलेवार जवाब दिये और न ही तथ्यात्मक जानकारी संसद के अंदर प्रस्तुत की। पिछली लोकसभा के अंतिम दिनों में तो उन्होंने रिकॉर्ड डेढ़ सौ से ज्यादा सांसदों का निलम्बन कराया और अपने कारोबारी मित्रों गौतम अदानी व मुकेश अम्बानी के साथ उनके रिश्तों को लेकर पूछे गये किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। इतना ही नहीं, मणिपुर की घटना हो या इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन अथवा इलेक्टोरल बॉडस का मुद्दा, इनमें से किसी पर भी पर मोदी ने कभी संसद में विपक्ष के पूछे सवालों के जवाब नहीं दिये। उल्टे, इस बाबत हुई चचाओं में विपक्षी नेताओं के वक्तव्यों के बड़े हिस्सों को विलोपित किया गया था। अक्सर मोदी विरोधियों के सवालों के उत्तर सदन के बाहर रैलियों व अन्य मंचों से दिये जाने वाले भाषणों में देते रहे। इसलिये उनका प्रतिपक्ष को चर्चा का आह्वान अपने आप में किसी बड़े लतीफे से कम नहीं है।

ये बाजपेयी के नहीं मोदी के नेतृत्व की सरकार है

@ राकेश अचल

अठारहवीं लोकसभा में यद्यपि सरकार को पहले ही दिन विपक्ष के तेवरों का सामना करना पड़ा है, लेकिन विपक्ष को भी याद रखना चाहिए कि 2024 में भाजपा के नेतृत्व में तीसरी बार गठबंधन की सरकार बनी है और इसकी अगुवाई प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी कर रहे हैं। ये सरकार अटलबिहारी बाजपेयी की सरकार नहीं है जिसे आसानी से अपदस्थ किया जा सके।

नरेंद्र दामोदर दास मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार बनी गठबंधन की सरकार में हालाँकि भाजपा की ताकत 2014 और 2019 जैसी नहीं है, लेकिन भाजपा की हैसियत अभी भी मरे हुए हाथी जितनी तो है ही, यानि कम से कम सवा लाख की। इसलिए विपक्ष ये सपने देखना छोड़ दे कि इस सरकार को फूंक मार कर उड़ाया या गिराया जा सकता है। वैसे भी 2024 में देश की जनता ने भाजपा और विपक्ष को स्पष्ट जनादेश नहीं दिया है। भाजपा की ताकत कम कर उसे बैशाखनंदन बना दिया है वही विपक्ष को ताकत देकर ये संकेत दिया है कि यदि उन्हें सत्ता तक पहुंचना है तो एकता बनाये रखते हुए अगले चुनाव तक काम करना पड़ेगा, हुलफुलाहट में विपक्ष यदि कोई कदम उठता है तो वो देश के लिए भारी पड़ सकता है। नयी संसद के पहले ही दिन विपक्ष ने संविधान की प्रतियां लेकर जो जुलूस निकला उससे नयी सरकार भयभीत कदाचित नहीं हुई है। प्रधानमंत्री ने संसद में प्रवेश से पहले जिस तरीके से आपातकाल का पुण्य स्मरण किया है उससे जाहिर है कि न उनके सिर से कांग्रेस का भूत अभी उतरा है और न उनका देश को कांग्रेस विहीन करने का लक्ष्य ही बदला है। मोदी जी लंगड़ी-लूली सरकार के जरिये भी अपने पुराने लक्ष्य को हासिल करने के लिए वो सब करेंगे जो उन्होंने अपनी पिछली सरकारों में किया था। विपक्ष लाख संविधान की प्रतियां लहराए वो नयी सरकार के बढ़ते हुए कदमों को शायद नहीं रोक पायेगा। विपक्ष की ताकत का अंदाजा लोकसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुनाव में ही हो जाएगा।

नए जनादेश में सब कुछ स्पष्ट है। विपक्ष को विपक्ष की भूमिका में तब तक रहना है जब तक कि नए आम चुनाव नहीं हो जाते। कायदे से चुनाव पांच साल बाद होना चाहिए लेकिन मौजूदा सूरतेहाल में ये चुनाव कभी भी हो सकते हैं। मेरा अनुभव कहता है कि देश में नए चुनाव समय से पहले करने का फैसला विपक्ष नहीं, बल्कि मौजूदा सरकार ही करेगी। मौजूदा सरकार अगले कुछ ही महीनों में अपनी खोई हुई ताकत वापस हासिल करने के लिए शीघ्र ही 'आपरेशन लोटस' की तर्ज पर कोई नया आपरेशन शुरू कर सकती है। नयी खिचड़ी सरकार के सामने कल भी कांग्रेस और विपक्ष निशाने पर था और आज भी है। सरकार सदन में अपने समर्थकों की मौजूदा संख्या बढ़ाने के लिए वो सब नैतिक -अनैतिक कर सकती है जो अटल बिहारी बाजपेयी नहीं कर पाए थे। अटल जी ने सत्ता बचने के लिए चिमटे का सहारा लेने से इंकार कर दिया था, लेकिन मोदी जी चिमटा क्या प्लास तक का इस्तेमाल करने से हिचकने वाले नहीं है। चूंकि नयी संसद का श्री गणेश कहें या विस्मिल्लाह कहें, कड़वाहट के साथ हो रहा है, इसलिए मुझे लगता है कि अभी देश में अदावत की राजनीती का युग समाप्त होने वाला नहीं है। आने वाले दिनों में भी ईडी और सीबीआई विपक्ष के खिलाफ उसी तरह इस्तेमाल की जाएगी जिस तरह पहले की गयी है। नयी सरकार ने भले ही संविधान की शपथ लेकर देश सेवा का वादा किया है किन्तु संविधान के दायरे में रहकर भी वो विपक्ष को नुक्सान करने से हिचकेगी नहीं। दरअसल अभी मधु का छत्ता भाजपा के पास है। विपक्ष के पास जो छत्ता है उसका मधु निकाला जा चुका है या उसमें मधु भरने में अभी समय लगेगा। ऐसे में विपक्ष के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी एकता को बनाये रखने की है। सत्ता की चाशनी में विपक्ष की कोई भी मख्खी छलांग लगा सकती है। देश के नए विपक्ष को नहीं भूलना चाहिए कि देश की तमाम संवैधानिक संस्थाओं पर अभी भी संघ के प्रचारक काबिज है। यहां तक कि न्यायपालिका भी इससे अछूती नहीं है। अनेक मामलों में आये अदालती फैसलों पर आप संघ प्रचारकों की सोच की छाप परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से पड़ती देख सकते हैं। आज भी पुरानी ईडी है जो अधीनस्थ न्यायलय से जमानत मिलने के बाद भी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल से बाहर नहीं आने देने के लिए ऊपर की अदालत में खड़ी हुई है। आज भी झारखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को किसी भी अदालत ने जमानत नहीं दी है। जाहिर है कि देश में जितनी भी संस्थाएं न्याय का फैसला करतीं हैं वे अभी भी संघ और भाजपा के प्रभाव में हैं। इन्हें विपक्ष हटा नहीं सकता हाँ, इनकी मुश्केंं बाँधने के लिए दबाब बना सकता है।

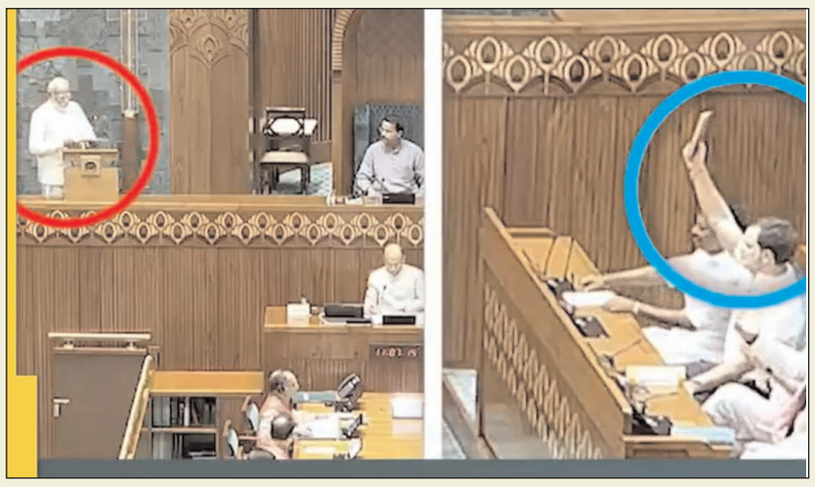

देश और दुनिया ने अतीत में देखा है कि पुरानी सरकार ने किस तरह से संसद को ध्वनिमत से चलाया था और विपक्ष को रत्ती भर भाव नहीं दिया था। कल को आज भी दोहराया जा सकता है। संसद को आज भी ध्वनिमत से चलने की जुर्रत नयी सरकार कर सकती है। 1 जुलाई से देश में लागू होने वाले नए कानून उसी पुरानी संसद की देन हैं जिसमें विपक्ष नहीं था। आज यदि विपक्ष इन कानूनों को लागू करवाने से रोकने में कामयाब हो जाये तो माना जा सकता हैकि भविष्य में वो नई सरकार को बे-पटरी होने से रोक सकता है। अन्यथा कुछ बदलने वाला नहीं है इस देश में।

नयी सरकार को लेकर मुझे तो कोई नई उम्मीद नहीं है, विपक्ष को हो तो हो। मुझे लगता है कि नयी सरकार पुराने ढर्रे पर ही चलने वाली है। यदि ये नई सरकार सचमुच गठबंधन की सरकार होती तो इसका कोई 'कॉमन मिनिमम प्रोग्राम' होता। इस सरकार का एजेंडा वो ही है जो भाजपा और संघ का है। जेडीयू और टीडीपी का एकमात्र एजेंडा अपने-अपने राज्य में अपनी-अपनी पार्टी की सरकारों को बनाये रखने का है। इन दोनों बैशाखियाँ प्रदान करने वाले दल भाजपा को उसके एजेंडे पर काम करने से रोकने की हैसियत नहीं रखते। ये दोनों दल विपक्ष के साथ खड़े होने का साहस भी आनन-फानन में जुटा नहीं सकते, क्योंकि ये दोनों जानते हैं कि मोदी जी की फितरत क्या है ?

डीएम ने की पचास लाख से अधिक लागत के कार्यों की समीक्षा

स्वास्थ्य-पुलिस विभाग के कार्य समय से न कराने पर ब्लैक लिस्ट करने की धमकी

सीएडडीएस एक्सईन की गैरहाजिरी पर कारण बताओ नोटिस

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने पचास लाख से ज्यादा के निर्माण कार्यों बाबत कार्यदायी संस्थाओं यूपीपीसीएल, आवास विकास परिषद बांदा, वन विभाग, उप्र सिडको, उप्र पुलिस आवास निगम, लोनिवि प्रांतीय खंड, लोनिवि निर्माण खंड बांदा, राज्य सेतु निगम, सीएडडीएस जल निगम यूनिट बांदा, सीएडडीएस यूनिट वाराणसी आदि को निर्देश दिये कि शासन से टाइमलाइन अनुसार कार्य करायें।

बैठक में निर्देश देते डीएम।

मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम अभिषेक आनन्द ने अंतर्राज्यीय/अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर दोलेन गेट व प्रकाश व्यवस्था कार्य प्रगति बाबत अधिशासी अभियंता प्रांतीय खंड को निर्देश दिये कि अपूर्ण कार्य जल्द पूरे करायें। वहां से मलबा हटाकर सफाई कराकर ब्रेकर हटायें। जिले में बन रहे सर्किट हाउस निर्माण प्रगति बाबत एक्सईएन को निर्देश दिये कि बिजली फर्नीचर का स्टीमेट शासन को भेजें, ताकि मंजूरी मिलते ही जल्द कार्य पूरा हो सके। राज्य सेतु निगम के कार्यों बाबत कहा कि अधूरे कार्य साइन बोर्ड, पेंटिंग कराकर नये फोटोग्राफ समेत अपलोड करायें। एक्सईएन सीएडडीएस के गैरहाजिर रहने पर कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। स्वास्थ्य विभाग व पुलिस विभाग के कार्य समय से न कराने पर ब्लैक लिस्ट करने की धमकी दी। कार्यदायी संस्था व ठेकेदार पर मामला दर्ज कराने की चेतावनी दी। कहा कि प्रोजेक्ट मैनेजर कार्य योजना भेजें, कब तक कार्य पूरा होगा। सीएडडीएस जल निगम के निर्माणाधीन नगर पालिका परिषद बाबत कहा कि राजकीय पुस्तकालय के लिए रास्ता छोड़ें। यूपीपीसीएल के कामदगिरि परिक्रमा मार्ग पर पर्यटन विकास कार्य बाबत कहा कि बिजली कनेक्शन कराकर गेट में प्रकाश व्यवस्था करायें। रामघाट व शिवरामपुर तिराहा तक पथ प्रकाश व जनरेटर व्यवस्था बाबत कहा कि कार्य पूरा हो गया है। नगर पालिका परिषद को हैंडओवर करायें। कामदगिरि परिक्रमा मार्ग स्थित कुंड का सुन्दरीकरण रेलिंग, लाइटिंग कार्य पूरा करायें। कुंड में अलग से बोरिंग करायें, ताकि पानी की समस्या न हो। अमृत सरोवर के तहत रणन तालाब कर्वी सुन्दरीकरण बाबत कहा कि अच्छे से लाइटिंग व पौधरोपण करायें।

जिलाधिकारी ने कार्यदाई संस्थाओं से कहा कि जो टेंडर नहीं हुए, जल्द शुरू करायें। निर्देश दिये कि शासन की मंशानुसार कार्यों में गुणवत्ता हो। लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर, सीएमओ भूपेश द्विवेदी, डीएफओ नरेंद्र सिंह, डीडीओ राजकुमार त्रिपाठी, सीएमएस श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, सीओ सिटी राजकमल, सीबीओ सुभाष चंद्र, बीएसए लव प्रकाश यादव आदि मौजूद रहे।

पुलिस गिरफ्त में जुआरी।

जुआ खेलते पुलिस ने दबोचे पांच जुआरी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में चैकी प्रभारी सीतापुर गौरव तिवारी की टीम ने ताश के पत्तों पर हार-जीत की बाजी लगाते जुआ खेलते पांच जुआरियों को गिरफ्तार किया है।

मंगलवार को चैकी प्रभारी सीतापुर की टीम ने छापेमारी कर पद्दू उर्फ घनश्याम पुत्र छेदीलाल, राकेश निषाद पुत्र गुड्डा, भगवानदीन पुत्र चैधरी प्रसाद निवासी चकमाली अमानपुर, सोनू पुत्र इन्द्रपाल बड़ा गांव थाना बबेरू जिला बांदा हाल मुकाम कपसेठी व अजीत कुमार यादव पुत्र स्व गोविन्द प्रसाद भंभई को जुआ खेलते गिरफ्तार किया। जुआरियों के कब्जे से मालफड़ से 3520 रुपये, ताश के 52 पत्ते, जामा तलाशी में तीन सौ रुपये बरामद किये। उनके खिलाफ कोतवाली कर्वी में जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में चैकी प्रभारी सीतापुर गौरव तिवारी, सिपाही अभिषेक प्रताप सिंह, अतुल परिहार व रवि शंकर शामिल रहे।

छात्रा को आत्महत्या को उकसाने वाला गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा आशुतोष तिवारी की अगुवाई में दरोगा राजेन्द्र प्रसाद ने घर में घुसकर छेडछाड व पॉक्सो एक्ट वांछित विकास पुत्र प्रहलाद देवारी को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा राजेन्द्र प्रसाद व सिपाही मुकद्दर सिंह शामिल रहे। इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक मऊ अजीत कुमार पाण्डेय की अगुवाई में दरोगा इन्द्रजीत गौतम ने आत्महत्या को प्रेरित करने वाले वांछित/नामजद रंगीलाल निषाद पुत्र द्वारिका प्रसाद निषाद कनभय मजरा परदवां को गिरफ्तार किया। ज्ञात है कि इसकी छेडछाड की हरकतों से तंग आकर रविवार की शाम छह बजे नाबालिग बालिका ने आत्महत्या कर ली थी। टीम में दरोगा इन्द्रजीत गौतम, सिपाही राहुल पाण्डेय शामिल रहे।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

दस लीटर महुआ शराब समेत एक दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण व बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में थानाध्यक्ष बहिलपुरवा राम सिंह की अगुवाई में दरोगा अनुभव वर्मा की टीम ने अमित कुमार पुत्र अरविन्द प्रजापति निवासी मोहकमगढ़ नयागांव मप्र के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया। उस पर आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा अनुभव वर्मा व सिपाही होलीकेन्द्र शामिल रहे।

त्रिस्तरीय कमेटी की मनमानी से क्षुब्ध सदस्यों ने दिया स्तीफा

पहाडी बुजुर्ग गांव का मामला

अखंड भारत संदेश

पहाडी/चित्रकूट। पहाडी बुजुर्ग गांव के ग्राम पंचायत सदस्य रामस्वरुप, रोहित कुमार, गोकुल प्रसाद, राजकुमार, राजबहादुर, तारा देवी, पवन पाण्डेय, नन्दकिशोर, ज्ञानमती देवी, केशमती, राममिलन, सुनीता देवी ने जिलाधिकारी से भेंटकर कहा कि त्रिस्तरीय कमेटी मनमानी ढंग से कार्य करा रही है। ग्राम पंचायत सदस्य क्षुब्ध होकर पंचायत की समितियों से स्तीफा दे रहे हैं। मंगलवार को ग्राम पंचायत पहाडी बुजुर्ग के ग्राम पंचायत सदस्य जिलाधिकारी कार्यालय आये। जिलाधिकारी से भेंटकर कहा कि ग्राम पंचायत में शासन से त्रिस्तरीय कमेटी दुबारा गठित हुई है। पूर्व में बिना बैठक व बिना सदस्यों के गुणवत्तापूर्ण कार्य नहीं हुए। इस बार भी दलित सीट व आरक्षण से प्रधान का चयन जनता ने किया तो अनुसूचित जाति के नाम डोगल नहीं बनाया। कमेटी का कहना है कि जिलाधिकारी ने पर्सनल कमेटी में रखा है, जो मर्जी होगी वही करेंगे। इस दशा में सदस्यों का ग्राम पंचायत के विकास में उपस्थित अनिवार्य नही है। कमेटी में रहने का क्या औचित्य है। पहाडी बुजुर्ग में बिना बैठक के प्रस्ताव पारित हो रहे हैं। गुणवत्ताविहीन कार्य हो रहे हैं। त्रिस्तरीय कमेटी का विरोध करते हुए समितियों से स्तीफा की पेशकस की। भीषण गर्मी में 60 फीसदी हैण्डपम्प खराब हैं। कमेटी गांव के धन को कूटनीति व साजिश से बंदरबांट कर रहे हैं। इस दशा में उनका स्तीफा मंजूर किया जाये। इसकी प्रतिलिपि उच्चाधिकारियों को भेजी है।

डीएम से भेंट करते पहाडी बुजुर्ग गांव के सदस्य।

विवाहिता ने किया आत्महत्या का प्रयास

पिता ने पति पर शराब पीकर मारपीट का लगाया आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सुलह-समझौते बाद ससुराल आई विवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। ससुरालीजन आनन-फानन उसे फंदे से उतारकर जिला अस्पताल ले गये। गंभीर दशा में डॉक्टरों ने प्रयागराज रेफर कर दिया।

ये मामला जिला मुख्यालय के शंकर बाजार स्थित बिजली पावर हाउस के पास का है। मानिकपुर थाना क्षेत्र के पतेरिया गांव के रामानुज अग्रहरि ने बताया कि दस साल पहले बेटी कविता उर्फ रिंकी (27) का विवाह रामजी अग्रहरि से किया था। पति शराब के नशे में बेटी की पिटाई करता था। अप्रैल में समझौता कर बेटी को घर ले आया था। पिता रामानुज ने आरोप लगाया कि आये दिन बेटी की पति पिटाई करता था। तंग आकर बेटी ने फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। रिश्तेदार व पडोसियों की सूचना पर वह यहां आया है। सोमवार को पड़ोसियों ने बताया कि बेटी ने फांसी लगा ली है। अस्पताल पहुंचा तो पता चला कि गंभीर दशा में प्रयागराज ले गये हैं। पिता ने आरोप लगाया कि बेटी को फांसी लगाकर जान से मारने का प्रयास किया है।

लोकतंत्र सेनानियों को भाजपा ने किया सम्मानित

आपातकाल दिवस को मनाया काला दिवस

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा ने कांग्रेस सरकार के देश में थोपे लोकतंत्र की हत्या साजिश आपातकाल 25 जून को काला दिवस मनाते हुए लोकतंत्र सेनानी सम्मान समारोह आयोजित किया। जिला मुख्यालय के लोनिवि सर्किट हाउस में मंगलवार को बतौर मुख्य अतिथि/पूर्व राज्यमंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी की अध्यक्षता व जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय की मौजूदगी में लोकतंत्र सेनानी रामप्रकाश द्विवेदी, रामपाल त्रिपाठी, ननकूराम राजपूत, भगीरथी गुप्ता का सम्मान किया। भाजपा पितृ पुरुष डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी व पं दीनदयाल उपाध्याय के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। चन्द्रिका उपाध्याय, लवकुश चतुर्वेदी, चन्द्र प्रकाश खरे, दिनेश तिवारी, पंकज अग्रवाल, आलोक पाण्डेय ने लोकतंत्र सेनानियों को अंगवस्त्र पहनाकर स्मृति चिन्ह भेंटकर उनके संघर्षों को नमन किया। लोकतंत्र सेनानी सम्मान समारोह व गोष्ठी बाद कार्यकर्ताओं ने काली पट्टी बांधकर सर्किट हाउस से सरदार पटेल चैराहे तक मौन जुलूस निकाला। गोष्ठी में चन्द्रिका उपाध्याय ने कहा कि आपातकाल लोकतंत्र की हत्या था। लोकतंत्र सेनानी राम प्रकाश द्विवेदी ने कहा कि आपातकाल के विरोध में वे नवयुवक थे। कांग्रेस के उत्पीड़न-प्रताड़ना से वे मीसा कानून में जेल में बंद थे। लोकतंत्र की रक्षा को कई लोगों ने प्रयास किया था। इस मौके पर विपुल सिंह, ब्रजेश पाण्डेय, डीसीबी अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, महेन्द्र कोटार्य, रामबाबू गुप्ता, तीरथ तिवारी, अखिलेश रैकवार, प्रेमलाल बाल्मीकी, अनूप राघव, श्रद्धांशु, सच्चिदानंद गर्ग, श्रवण पटेल, सुनील गर्ग, पवन बद्री, राम प्रताप, श्रवण, भगवानदीन, शिव प्रकाश खंगार व जिला मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

काला दिवस मनाते भाजपाई।

बनाडी-गढीवा के ग्रामीणों ने डीएम से की मुआवजे की मांग

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कर्वी तहसील के बनाडी-गढीवा के ग्रामीण गुलाबचन्द्र, विजय सिंह, बाबूलाल, सुनील, बच्चूलाल, अवधनरेश, रामनरेश, पूर्व प्रधान सुकरी देवी, सुनीता आदि ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि पटेल तिराहा से देवांगना घाटी तक फोरलेन चैडीकरण हो रहा है। उन्हें अभी तक मुआवजा नहीं मिला। जिलाधिकारी ने जल्द मुआवजा दिलाने का भरोसा दिया। मंगलवार को बनाडी-गढीवा के ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि पटेल तिराहा से कर्वी-देवांगना सडक के चैडीकरण प्रस्तावित भूमि के वे कास्तकार हैं। फरवरी-मार्च में फोरलेन चैडीकरण को उनकी जमीन अधिग्रहीत की गई। कास्तकारों को अभी तक कोई मुआवजा नहीं मिला, जबकि चैडीकरण का कार्य जारी हो गया है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से मांग की है कि कास्तकारों को बिना मुआवजा दिये कार्य न कराया जाये। मुआवजा न मिलने पर कास्तकार धरना-प्रदर्शन को बाध्य होंगे। जिलाधिकारी ने कास्तकारों को भरोसा दिया कि जल्द मुआवजा दिलाया जायेगा।

बार एसो ने जताया तीनों नये कानूनों का विरोध

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष व सचिव मनोज कुमार कंचनी ने कहा कि अरसे से चले आ रहे साक्ष्य व दंड विधान विधियों में बदलाव कर तीन नये कानून आईपीसी के स्थान पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व साक्ष्य विधि के स्थान पर भारतीय साक्ष्य अधिनियम को एक जुलाई से लागू करने का अधिवक्ता संघ तीखा विरोध करता है।

मंगलवार को जिला बार एसोसिएशन सभागार में अध्यक्ष संजय करवरिया व सचिव मनोज कुमार कंचनी ने कहा कि कानूनों में बदलाव कर पुर्नविचार किया जाये। इसके बाद ये कानून लागू किये जायें। संविधान की मंशा के विपरीत है। विधि व्यवस्था में जटिलता व न्याय प्रक्रिया में भ्रम पैदा करने वाले हैं। पूर्व महासचिव शिवशंकर उपाध्याय ने कहा कि ये तीनों नये कानून समाज व जनता में भ्रम पैदा करने वाले हैं। जनता व अधिवक्ताओं में तालमेल नहीं बनेगा। उन्होंने जिला बार एसोसिएशन के विरोध का समर्थन किया। वरिष्ठ अधिवक्ता रामेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि तीनों नये कानून अधिवक्ताओं के कार्यों व अधिकारों को प्रभावित करने वाले हैं। तीनों नये कानूनों का विरोध जताया। इस मौके पर जिला बार एसोसिएशन के तमाम अधिवक्ता मौजूद रहे।

विरोध जताते अधिवक्ता।

चालक को नींद आने से पुलिया में वाहन पलटा, एक की मौत, 21 घायल

मऊ/चित्रकूट। थाना क्षेत्र के झांसी-मिर्जापुर राजमार्ग सुरौंधा गांव की पुलिया पर भट्ठा के लिए मजदूर लेकर जा रहे पिकअप डाला बेकाबू होकर पुलिया के नीचे गिरकर पलट गया। डाला में सवार 22 स्त्री-पुरुष में एक बच्ची की मृत्यु हो गई, 21 लोग मामूली घायल हो गये। ये हादसा मंगलवार को तडके 4-5 बजे के बीच मऊ थाने के सुरौंधा पुलिया में हुआ। बताया गया कि वाहन संख्या यूपी 70केटी-7531 में भट्ठा को मजदूर लेकर खम्हौरा अतर्रा-बांदा से प्रयागराज जा रहा था। चालक को नींद आने से पिकअप डाला पुलिया के नीचे गिरकर पलट गया। उसमें सवार लोग चींख-पुकार मचाने लगे। चालक मौके से फरार हो गया। वाहन में सवार ज्योति (12) पुत्री रज्जू रैदास खम्हौरा अतर्रा बांदा की मृत्यु हो गई। बांकी लोगों को चोटें आई। सूचना पर मऊ थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सभी घायलों को इलाज को सीएचसी मऊ में भर्ती कराया। मृतका ज्योति का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। वाहन में खम्हौरा अतर्रा-बांदा के 13 लोग, बछेही गिरंवा बांदा का एक, छिलोलर कमासिन बांदा के चार, उल्लूखेड़ा बिसंडा बांदा के चार कुल स्त्री-पुरुष-बच्चे 22 लोग सवार थे।

जमौली में गलाघोंटू वैक्सीन लगाने से 50 भैंस की हालत खराब, एक की मौत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पशु विभाग की लापरवाही से पशुओं को गलाघोंटू की वैक्सीन लगाते ही 50 से ज्यादा भैंस की हालत बिगड़ गई। एक भैंस की मौत हो गई।

ये मामला राजापुर तहसील के जमौली गांव का है। बताया गया कि पशु चिकित्सा विभाग बरसात से पहले दुधारू पशुओं में लगड़ी बुखार व गलाघोंटू रोग से बचाव को टीकाकरण कर रहा था। पशु चिकित्सा विभाग की टीम सोमवार को पशुओं को वैक्सीन लगाने को जमौली गई थी। गलाघोंटू की वैक्सीन लगाने से 50 से ज्यादा भैंस की हालत बिगड़ गई। एक-एक कर भैंस बेहोश होकर गिरने लगी। एक भैंस की मौत हो गई। इससे हड़कम्प मचते ही पशु विभाग की टीम भैंस के इलाज को जमौली पहुंचीं। पशु पालकों ने कहा कि पशु चिकित्सा विभाग की लापरवाही से ये सब हुआ है। वैक्सीन लगाते ही भैंस की हालत खराब हुई है। एक भैंस की मौत हुई है। भैंस की कीमत 50 हजार से ऊपर है। भैंस की मौत का आंकड़ा बढ़ा तो लाखों की क्षति हो जायेगी। किसानों ने सरकार से मुआवजे की मांग की है।इस मामले में पशु चिकित्सा अधिकारी सुभाष सिंह ने कहा कि ब्रिलियंट कंपनी की वैक्सीन लगाई गई है। 52 भैंस को ये टीका लगाया है। एक भैंस की मौत हो गई। 51 भैंस बीमार हैं। जिनका इलाज टीम कर रही है। ब्रिलियंट कंपनी की वैक्सीन में कुछ कमी है। भैंस को लगाने में दिक्कत हो रही है, गाय को लगाने में कोई दिक्कत नहीं होती। ये वैक्सीन लगाने से भैंस का पेट फूलना, मुंह से झाग निकलना व कांपने की समस्या आ रही है। कुल तीन भैंस की मौत हुई है। दो पशु पालकों को कंपनी से मुआवजा दिलाया है।

वैक्सीन लगाते ही भैंस की हालत खराब।

वृक्षारोपण-प्राकृतिक कृषि से मिलेगा किसानों को लाभ

कार्बन क्रेडिट उपयोगिता व महत्व कार्यशाला हुई

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के वनवासी कल्याण केन्द्र में दो सौ महिला-पुरुष किसानों ने कार्बन परियोजना के तहत हितग्राहक परामर्श कार्यशाला अखिल भारतीय समाजसेवा संस्थान ने सृजन, एफसीएफ व सीजीई के सहयोग से किया।

मंगलवार को संस्थान निदेशक राष्ट्रदीप ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यशाला के उद्देश्य पर रोशनी डाली। बतौर मुख्य अतिथि/उप कृषि निदेशक राजकुमार ने कहा कि कार्बन उत्सर्जन को वृक्षारोपण व प्राकृतिक खेती समेत मोटे अनाज पैदा करने चाहिए। किसानों की आजीविका में वृद्धि होगी। आने वाली पीढ़ी को उपजाऊ व स्वस्थ भूमि मिलेगी। विशिष्ट अतिथि/वन क्षेत्राधिकारी बृजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि वनों को न काटें। पौधों को लगाये, ताकि प्रकृति में सुधार आये। सहायक विकासखण्ड अधिकारी मानिकपुर शिवनरेश पटेल मौजूद रहे।

फेयर क्लाइमेट फंड इंडिया लि से निशान्त ने कहा कि कार्बन जहरीली गैस नहीं है। ये एक गैस के रूप में नुकसान नहीं पहुंचाएगी। कार्बनडाई आक्साइड पर्यावरण का अहम हिस्सा है। मानव श्वास तंत्र में कार्बन आसपास घूमता है। अध्यक्ष/संस्थान संस्थापक गोपाल भाई ने कहा कि पर्यावरण को स्वच्छ-सुन्दर बनाने में किसान परिवार को पांच-पांच पौधे लगाने को प्रेरित किया। संचालन विजय सिंह, सुश्री भारती ने किया। आयोजन में भूमिका संजय शुक्ला, गुरुदयाल, देशराज, बिंदा, शिवकुमार, राम विलाश, सुरेंद्र, भरत, अनीश, राजू, श्याम सुंदर, मनोज व धीरेंद्र ने निभायी।

कार्यशाला में बोलते उपनिदेशक राजकुमार।

काम की आदत बनाए सुडौल कमर

मोटापा न केवल खूबसूरती का दुश्मन है वरन अनेक रोगों का घर है। मोटापा विभिन्न रोगों को निमंत्रण भी देता है। मोटापा एक ऐसा रोग है जो बहुत प्रयत्न के बाद भी शायद ही पीछा छोड़े। खानपान, रहन-सहन में थोड़ी-सी लापरवाही मोटापे का द्वार खोल देती है। प्रारंभ में तो अनजाने से ही ऐशोआराम की मानसिकता के तहत हम स्वयं ही मोटापे को बुलावा देते हैं।

बाद में किताबों में पढ़कर, कहीं से सुनकर उससे छुटकारा पाने के नित नवीन तरीके आजमाते हैं। अधिकांश प्रयोग माटी का उल्टा पड़ा चिकना घड़ा ही साबित होते हैं। वॉशिंग मशीन, मिक्सर, गैस व काम करने वाली महरियों की बदौलत शरीर पर चर्बी की परत-दर-परत जमा होती जाती है। सुविधाभोगी जिंदगी के हम इतने आदी हो चुके हैं कि इसका परिणाम जानते हुए भी आरामतलब जिंदगी छोड़ना नहीं चाहते।

सुंदर-छरहरी काया, सुडौल कमर, भला किसे अच्छी नहीं लगती। लेकिन इसके लिए प्रयत्न आवश्यक है। व्यायाम, शारीरिक श्रम व जिव्हा पर नियंत्रण रखकर हम काफी हद तक मोटापे को रोक सकते हैं। आचार-व्यवहार, रहन-सहन पर अंकुश लगाए बगैर हम छरहरे नहीं रह सकते। स्वास्थ्यप्रद क्रियाकलापों को हम अपनी दिनचर्या में शामिल कर लें तो मोटापे के जालिम पंजों से बचा जा सकता है। मोटापे के संदर्भ में कुछ ध्यान रखने योग्य बातें निम्न हैं :

नियमित व्यायाम, खेलकूद, तेज चाल से घूमना, शरीर के आकार व वजन को संतुलित रखता है। खेलकूद व व्यायाम का पर्याय शारीरिक श्रम है। घरेलू कार्य- पोंछा लगाना, सफाई करना, कपड़े धोना आदि से पर्याप्त श्रम हो जाता है और चर्बी नहीं चढ़ने पाती।

व्यापार, दफ्तर अथवा घरेलू कार्यों से निपटने के बाद बिस्तर से न चिपकें। हालाँकि सोना, आराम करना अच्छा लगता है। लेकिन कुछ दिनों बाद ही इसके दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं। अपने खाली समय में बुनाई, कढ़ाई, पेंटिंग, लेखन या अन्य रचनात्मक कार्य करें। इससे रचनात्मकता में वृद्धि के साथ लोगों में मोटापा भी नहीं बढ़ेगा।

कई लोगों की आदत दिनभर कुछ न कुछ खाने की होती है। फुर्सत में बैठे हैं तो खाना, टी.वी. देखते देखते खाना। कुछ व्यक्ति दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने अथवा अपनी कुंठा को दूर करने के लिए भी कुछ न कुछ खाते रहते हैं। वजह चाहे जो कुछ हो, दिनभर खाने से चर्बी तो बढ़ती ही है, चयापचय की क्रिया भी शिथिल होती है।

नजदीक का फासला पैदल ही तय करें। चंद कदमों के लिए वाहन का प्रयोग न करें। पैदल चलने से व्यायाम तो होगा ही कभी पैदल चलने का मौका आने पर दिक्कत महसूस नहीं होगी। सुबह-शाम ताजा भोजन करें। समय व श्रम की बचत करने के लिए बहुत-सी महिलाएँ फ्रिज की बदौलत ढेर सारा खाना बना लेती हैं। समय व श्रम की बचत के और भी कई तरीके हैं, उन्हें आज माइए।

बासी भोजन में पौष्टिकता अमूमन पूरी तरह नष्ट हो जाती है। गरिष्ठ, तले, मसालेदार, खटाईयुक्त भोजन से परहेज करें। इनसे मोटापे के साथ-साथ अन्य बीमारियों की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।

हृष्टभोजन चाहे हल्का-फुल्का हो या गरिष्ठ अपनी क्षमता के अनुसार ही ग्रहण करें। जितनी कैलोरी ग्रहण की है, शारीरिक श्रम द्वारा उतनी ही खर्च भी करें।

मानसिक कार्य करने वाले व्यक्ति, अधिकारी जिनको पैदल चलने का काम कम पड़ता है, अक्सर मोटापे का शिकार हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को खानपान का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। प्रतिदिन व्यायाम व सैर भी लाभदायक होती है।

अंकुरित अन्न, सलाद, सूप का समावेश भोजन व नाश्ते में अवश्य करें। ये चर्बी घटाने के अतिरिक्त छाले, कैंसर, कब्ज आदि रोगों की रोकथाम में सहायक होते हैं।

केक, पेस्ट्री, आइसक्रीम, डिब्बाबंद भोज्य पदार्थों का सेवन कम से कम करें। पानी ज्यादा से ज्यादा पिएँ। भोजन से पहले व तुरंत बाद पानी पीना हानिकारक है।

निश्चित समय पर भोजन करें। अनियमित भोजन से दूर रहें। रात का भोजन सोने से तीन घंटे पहले अवश्य कर लें। खाना खाने के बाद 10 मिनट वज्रासन में अवश्य बैठें।

बढ़ती उम्र के साथ पाचन क्रिया शिथिल होती जाती है। अतः तेल, घी, चाय, काफी का सेवन सीमित कर फलों के रस, सलाद, सूप आदि को प्राथमिकता दें। आलस्य, लापरवाही, अकर्मण्यता, विलासितापूर्ण जीवनशैली मोटापे का मुख्य कारण है। इनसे परहेज करने की कोशिश करें।

हेल्थ एंड फिटनेस टिप्स

शरीर को लचीला बनाने वाली गतिविधियाँ अवश्य करें। कार्डियोवैस्कुलर व्यायाम से मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं। व्यायाम से जोड़ों के दर्द संबंधी शिकायतों में कमी आती है। नियमित व्यायाम से रक्तप्रवाह अच्छा रहता है शरीर में ऐंडोरफिन निकलता है जो कुदरती तौर पर पीड़ा से आराम देता है। पीठ दर्द और डिस्क से दबाव घटाने के लिए पैदल चलने की सलाह दी जाती है। सीधे बैठने व खड़े रहने से मांसपेशियों व हड्डियों की समस्याओं से निजात मिलने में दूरगामी असर देखने को मिलता है। नीचे पड़ी कोई चीज उठाने के लिए अपने घुटनों को मोड़े। कोई भारी वस्तु जमीन से ऊपर उठाते वक्त उसे अपने शरीर के पास रखें। इससे पीठ के निचले भाग में जोर नहीं पड़ता। भारी सामान उठाते हुए शरीर को मोड़ें नहीं । वजनी चीजों को खीचें नहीं धकेलें ।

कोछड़ आयुर्वेदा सेंटर
परामर्श हेतु
9478012000
मोगा (पंजाब)

आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है...

दृष्टिहीनता की विकरालता, व्यापकता तथा उसके द्वारा होने वाले शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य दुष्परिणामों ने पूरे विश्व को चिंतित कर रखा है। इस समस्या के निराकरण की चर्चा तो प्रायः होती रहती है, किंतु मूल समस्या यथावत होने के परिणामस्वरूप यह विचार उठना स्वाभाविक है कि या तो प्रयासों में गंभीरता की कमी या प्रयास अपर्याप्त हैं। इस विचार को इस बात से भी बल मिलता है कि पूर्व में प्रत्येक स्तर पर किए गए प्रयास या कार्यक्रम विभिन्न कारणों से सफल नहीं हो पाए हैं।

यह सामयिक होगा कि हम समस्या के वर्तमान परिदृश्य का परीक्षण करें। समाज को यह भी बताएँ कि दृष्टिहीनता गरीबी का एक महत्वपूर्ण कारण है और अग्रिम स्थान पर है, जो उन्मूलन की माँग करता है। दृष्टिहीनता का 80 प्रतिशत भाग नेत्र सुरक्षा के उपयुक्त उपाए या उचित उपचार से रोका जा सकता है।

यदि दृष्टिहीनता की रोकथाम में संलग्न संगठन, संस्थाएँ तथा व्यक्ति मिलकर सामूहिक रूप से समर्पित भावना से कार्य करें तो लाखों महिला-पुरुष तथा बच्चों को दृष्टिहीनता से बचाया जा सकता है, जो अंततः अपने परिवार के साथ राष्ट्रीय विकास में भागीदार हो सकते हैं।दृष्टिहीनता के कारण प्रायः गरीबी तथा गुणवत्ता आधारित नेत्र चिकित्सा के अभाव से जुड़े हैं और अत्यधिक गरीब एवं उपेक्षित वर्ग में दिखते हैं। विकासशील देशों में विकसित देशों की तुलना में दृष्टिहीन होने की संभावना 5-10 गुना अधिक होती है।

दृष्टिहीन व्यक्तियों का 80 प्रतिशत 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग का है। विडम्बना है कि नेत्ररोग उपचार सुविधाओं की उपलब्धता में भी लिंगीय असमानता है। महिला तथा लड़कियों के 35 प्रतिशत भाग को ही यह सुविधा मिल रही है, जबकि शेष 65 प्रतिशत पुरुष तथा लड़कों को प्राप्त हो रही है।

दूसरी ओर दृष्टिहीनों की कुल संख्या का 2/3 भाग महिला तथा लड़कियों का है। दृष्टिहीनता से पीड़ित 80 प्रतिशत व्यक्तियों की नेत्र सुरक्षा, उचित सामयिक उपचार के माध्यम से रोकथाम हो सकती है। 20 प्रतिशत की रोकथाम तथा 60 प्रतिशत उपचार के माध्यम से यह उचित अवसर है

कि हम दृष्टिहीनता के प्रमुख कारणों को भी जानें। विश्व दृष्टि दिवस के दिन जनजागरण हेतु प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी रुचि के अनुसार कार्य कर समाज का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित करता है। इस विशेष अवसर पर पौधारोपण, फोटो का आदान-प्रदान, पोस्टर, बुकमार्क तथा पुस्तिका वितरण जैसे कार्यों के माध्यम से दृष्टि दिवस की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है।

कार्ययोजना में वरिष्ठ नागरिक, शिशु वर्ग, महिला तथा लड़कियों हेतु विशेष उपायों का समावेश प्राथमिकता के आधार पर अनिवार्य रूप से करने से इस वर्ग को राहत मिल सकेगी। उसी प्रकार ग्रामीण व जनजाति वर्ग के लिए भी विशेष योजना बनाना पड़ेगी। प्रस्तावित कार्ययोजना का स्वरूप तथा कार्यप्रणाली ऐसी हो कि 2020 तक समस्त दृष्टिहीनों को पूर्ण या आंशिक रूप से लाभ प्राप्त हो सके ताकि 'राइट टू साइट' का हमारा नारा चरितार्थ हो सके। यदि ऐसा हो सका तो विश्व दृष्टि दिवस सार्थक हो सकेगा, जिसकी हम कामना करते हैं।

M : 94780-12000, 99141-46147 परामर्श हेतु संपर्क करे M : 94645-55515
कोछड़ आयुर्वेदा सेंटर
सामने शिवाला मंदिर मेन बाजार, मोगा–142001 (पंजाब)